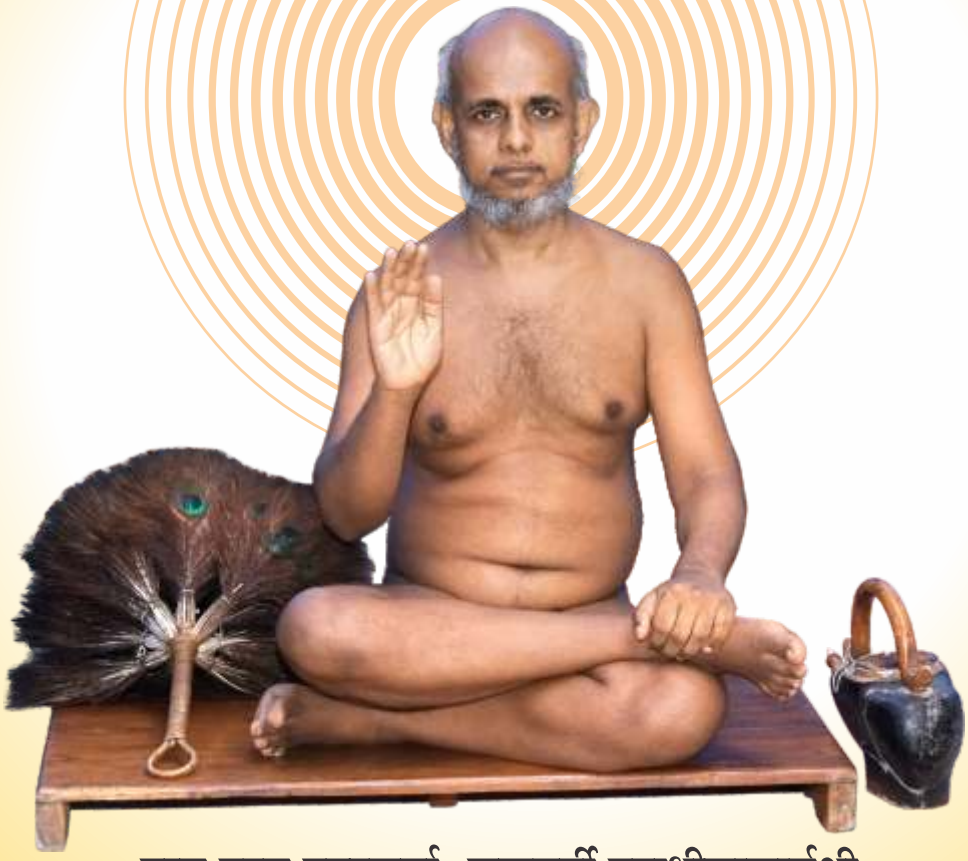

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणा:–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

विशद अष्टापद पूजा, आरती, चालिसा एवं श्री ऋषभदेव मण्डल विधान

कृतिकार :
परम पूज्य आचार्यश्री विशदसागर जी महाराज

प्राप्ति स्थान :
विशद साहित्य केन्द्र
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, कुआँ वाला,
जैनपुरी रेवाड़ी (हरियाणा)

(परम्परानायक)

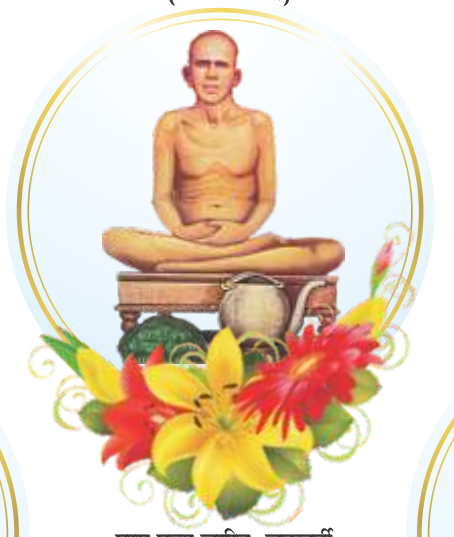

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्रायः होता है। फलतः उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तृत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

विशद

अष्टापद पूजा, आरती, चालीसा एवं श्री ऋषभदेव मण्डल विधान

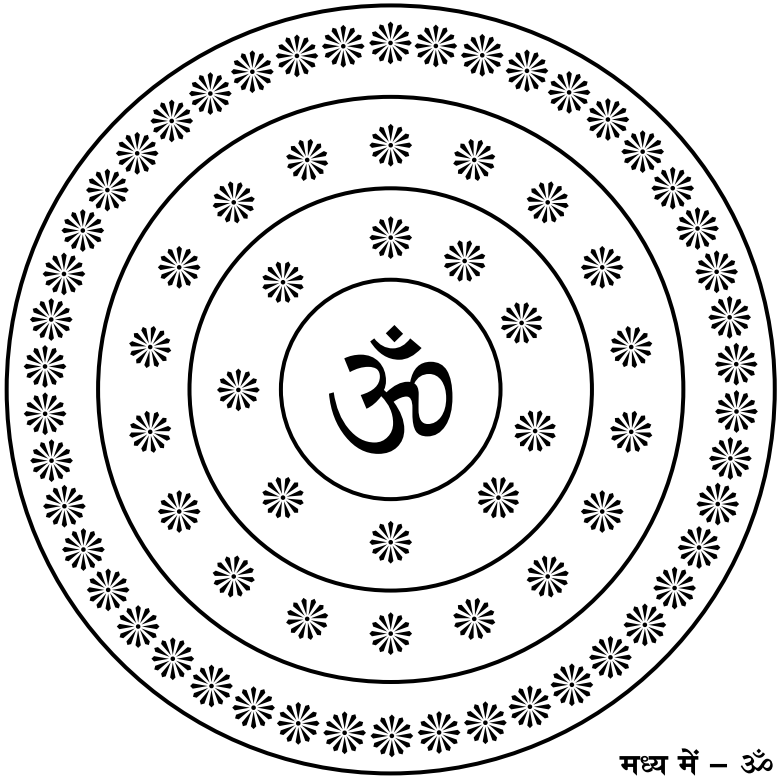

मध्य में – ॐ
प्रथम वलय में – 9 अर्घ्य
द्वितीय वलय में – 18 अर्घ्य
तृतीय वलय में – 46 अर्घ्य
कुल 73 अर्घ्य

:: रचयिता ::
प. पू क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

कृति : विशद अष्टापद तीर्थ विधान
कृतिकार : प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
संस्करण : प्रथम-2018 प्रतियाँ : 1000
संकलन : मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
सहयोगी : आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी
ऐलक श्री विदक्ष सागर जी महाराज
क्षुल्लक श्री विसोमसागरजी महाराज
क्षुल्लिका श्री वात्सल्यभारती माताजी
संपादन : ब्र. ज्योति दीदी 9829076085
ब्र. आस्था दीदी 9660996425,
ब्र. सपना दीदी 9829127533
संयोजन : ब्र. सोनू दीदी, ब्र. आरती दीदी,
प्राप्ति स्थल : 1. विशद साहित्य केन्द्र सुरेश जैन सेठी जयपुर,
9413336017
2. श्री महेन्द्र कुमार जैन, सैक्टर-3 रोहिणी,
9810570747
3. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी
09416888879
4. विशद साहित्य केन्द्र, हरीश जैन, दिल्ली
मो. 09818115971, 09136248971
मूल्य : 35/- रु. मात्र

:: अर्थ सौजन्य ::

मुद्रक : पारस प्रकाशन, दिल्ली. मो.: 9811374961, 9811363613
ईमेल : pkjainparas@gmail.com, kavijain1982@gmail.com

मंगलाष्टक (भाषा)

पूजनीय इन्द्रों से अर्हत्, सिद्ध क्षेत्र सिद्धी स्वामी।
जिन शासन को उन्नत करते, सूरी मुक्ती पथगामी॥
उपाध्याय हैं ज्ञान प्रदायक, साधू रत्नत्रय धारी।
परमेष्ठी प्रतिदिन पापों के, नाशक हों मंगलकारी॥1॥
नमित सुरासर के मुकुटों की, मणिमय कांति शुभ्र महान्।
प्रवचन सागर की वृद्धि को, प्रभु पद नख हैं चंद्र समान॥
योगी जिनकी स्तुति करते, गुण के सागर अनगारी।
परमेष्ठी प्रतिदिन पापों के, नाशक हों मंगलकारी॥2॥
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण युत, निर्मल रत्नत्रयधारी।
मोक्ष नगर के स्वामी श्री जिन, मोक्ष प्रदाता उपकारी॥
जिन आगम जिनचैत्य हमारे, जिन चैत्यालय सुखकारी।
धर्म चतुर्विध पंच पाप के, नाशक हों मंगलकारी॥3॥
तीन लोक में ख्यात हुए हैं, ऋषभादिक चौबीस जिनदेव।
श्रीयुत द्वादश चक्रवर्ति हैं, नारायण नव हैं बलदेव॥
प्रति नारायण सहित तिरेसठ, महापुरुष महिमाधारी।
पुरुष शलाका पंच पाप के, नाशक हों मंगलकारी॥4॥
जया आदि हैं अष्ट देवियाँ, सोलह विद्यादिक हैं देव।
श्रीयुत तीर्थंकर की माता-पिता, यक्ष-यक्षी भी एव॥
देवों के स्वामी बत्तिस वसु, दिक् कन्याएँ मनहारी।
दश दिक्पाल सहित विघ्नों के, नाशक हों मंगलकारी॥5॥
सुतप वृद्धि करके सर्वौषधि, ऋद्धी पाई पञ्च प्रकार।
वसु विधि महा निमित् के ज्ञाता, वसुविधि चारण ऋद्धीधार॥
पंच ज्ञान तिय बल भी पाये, बुद्धि सप्त ऋद्धीधारी।
ये सब गण नायक पापों के, नाशक हों मंगलकारी॥6॥

आदिनाथ स्वामी अष्टापद, वासुपूज्य चंपापुर जी।
नेमिनाथ गिरनार गिरि से, महावीर पावापुर जी।।
बीस जिनेश सम्मेदशिखर से, मोक्ष विभव अतिशयकारी।
सिद्ध क्षेत्र पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।7।।
व्यंतर भवन विमान ज्योतिषी, मेरु कुलाचल इष्वाकार।
जंबू शाल्मलि चैत्य वृक्ष की, शाखा नंदीश्वर वक्षार।।
रूप्यादि कुण्डल मनुजोत्तर, में जिनगृह अतिशयकारी।
वे सब ही पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।8।।
तीर्थंकर जिन भगवंतों को, गर्भ जन्म के उत्सव में।
दीक्षा केवलज्ञान विभव अरु, मोक्ष प्रवेश महोत्सव में।।
कल्याणक को प्राप्त हुए तब, देव किए अतिशय भारी।
कल्याणक पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।9।।
धन वैभव सौभाग्य प्रदायक, जिन मंगल अष्टक धारा।
सुप्रभात कल्याण महोत्सव, में सुनते-पढ़ते न्यारा।।
धर्म अर्थ अरु काम समन्वित, लक्ष्मी हो आश्रयकारी।
मोक्ष लक्ष्मी 'विशद' प्राप्त कर, होते हैं मंगलकारी।।10।।

।।इति मंगलाष्टक।। पुष्पांजलिं क्षिपेत।।

हस्त शुद्धि

ॐ ह्रीं असुजर-सुजर हस्त प्रच्छालनं करोमि स्वाहा।
अमृत शुद्धि मंत्र-ॐ ह्रीं: अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय-2 सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ठः ठः ह्रीं स्वाहा।

"जल शुद्धि मंत्र"

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्म महापद्म तिगिंछ केसरि पुण्डरीक महापुण्डरीक गंगा सिन्धु रोहिद्रोहितास्या हरिद्धरिकान्ता सीता सीतोदा नारी नरकान्ता सुवर्णकूला रूप्यकूला रक्ता रक्तोदा क्षीराम्भोनिधि शुद्ध जलं सुवर्ण घटं प्रक्षालितपरिपूरितं नवरत्न गंधाक्षत पुष्पार्चित ममोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झौं झौं वं वं मं मं हं हं क्षं क्षं लं लं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा।

(पीली सरसों अथवा लवंग से जल शुद्ध करना।)

लघु जलाभिषेक पाठ-1

तर्ज- आलोचना पाठ (चाल छन्द)

परिणाम की शुद्धी हेतू, जिनबिम्ब परम है सेतू।
जिन के दर्शन को पाते, निज के दर्शन हो जाते।।
परमेष्ठी पंच हमारे, हैं तारण तरण सहारे।
हम जिनाभिषेक को आए, जिनपद में शीश झुकाए।।1।।

(श्वोसोच्छवास पूर्वक नौ बार णमोकार मंत्र जाप करें)

अभिषेक प्रतिज्ञा

जिन प्रतिमा के न्हवन का, करते हम संकल्प।
भाव सुमन अर्पण करें, छोड़ के अन्तर्जल्प।।2।।

ॐ ह्रीं अभिषेक प्रतिज्ञायां परिपुष्पांजलि क्षिपेत्।

तिलक लगाने का मंत्र

चंदन खुशबूदार ले, तिलक करें नव अंग।
करें इन्द्र की कल्पना, धारें विशद उमंग।।

ॐ ह्रीं नवांगेषु तिलकं अवधारयामि।

श्रीकार लेखन

उभय लक्ष्मी प्राप्तजिन, तीर्थंकर भगवान।
पीठोपरि श्रीकार हम, लिखते महति महान।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं पीठोपरि श्रीकार लेखनं करोमि।

"सिंहासन स्थापना"

पाण्डु शिला की कल्पना, करते यहाँ विशेष।
न्हवन हेतु जिस पर यहाँ, तिष्ठो श्री जिनेश।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पीठथापनं (सिंहासन) स्थापनं करोमि।

"जिनबिम्ब स्थापना"

भक्तिभाव के रत्न जड़ित, पावन सिंहासन।
हृदय कमल मेरा हे प्रभु, भावों का आसन।।

आहवानन है यहाँ आपका, सिंहासन पर।
नाथ! पधारो आप विशद, श्रद्धा आसन पर॥5॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मतीर्थाधिनाय भगवन्निह पाण्डुक-शिलापीठे सिंहासने तिष्ठ तिष्ठ जिनबिम्ब स्थापनं करोमि।

"चार कलश स्थापना"

प्रासुक निर्मल नीर से, कलश भराए चार।
स्थापित चउ कोंण में, करते मंगलकार॥6॥

ॐ ह्रीं चतु:कोणेषु स्वस्तये चतु: कलशस्थापनं करोमि।

"अर्घ चढ़ावें"

जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल साथ।
करने को अभिषेक हम, अर्घ्य चढ़ाते नाथ!॥7॥

ॐ ह्रीं स्नपनपीठस्थित जिनायर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

"जल से अभिषेक"

जिन की मुद्रा जिन बिम्बों में, विशद झलकती अपरम्पार।
भावों से जिनवर का दर्शन, करते हैं हम बारम्बार॥
करते न्हवन यहाँ भक्ती से, नाथ! आपकी जय जय हो।
मोक्ष मार्ग पर बढ़े प्रभू मम्, जीवन यह मंगलमय हो॥8॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इ्वीं इ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर-जलेन जिनाभिषेचयामि स्वाहा।

"चार कलश से अभिषेक"

करते न्हवन चार कलशों से, कर्म घातिया मम क्षय हों।
अनन्त चतुष्टय पा जाऐं, हे नाथ! आपकी जय जय हो॥
करते न्हवन यहाँ भक्ती से, मम जीवन प्रभु अक्षय हो।
मोक्ष मार्ग पर बढ़े प्रभू मम्, जीवन यह मंगलमय हो॥9॥

ॐ ह्रीं श्री श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसन्तं श्री वृषभादिमहावीरान्त- चतुर्विंशति तीर्थंकर-परम-देवं-आद्यानां आद्ये मध्यलोके, जम्बूद्वीपे, भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे.... प्रदेशे....नाम्निनगरे.... तिथो....वासरे मुन्यार्यिका-श्रावक- श्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं चतु: कलशेन जलेनाभिषिंचयाम:॥

"वृहद जिनाभिषेक"

परमौदारिक परम सुगन्धित, प्रभु तन से शुभ अतिशय हो।
न्हवन सुगन्धित जल से करते, नाथ! आपकी जय-जय हो॥
करते न्हवन यहाँ भक्ती से, कर्मों पर मेरी जय हो।
मोक्ष मार्ग पर बढ़े प्रभू मम्, जीवन यह मंगलमय हो॥10॥

ॐ ह्रीं श्री क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इ्वीं इ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सं क्ष्वीं क्ष्वीं हं स: झं वं ह्र: य: स: क्षां क्षीं क्षं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्ष: क्ष्वीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रं ह्र: ह्रीं द्रां द्रीं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठ: ठ: इति सुगन्धित जलेन वृहच्छांति-मन्त्रेणाभिषेकं करोमि।

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके 'विशद' पावन अर्घ्य चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं अभिषेकान्ते वृषभादिवीरान्तेभ्योऽर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- शुद्ध वस्त्र से बिम्ब का, करते हम प्रक्षाल।
यही भावना है विशद, कटे कर्म जंजाल॥12॥

ॐ ह्रीं अमलांशुकेन जिनबिम्बमार्जनं करोमि।

आसन पर जिनराज को, करें विशद आसीन।
विनयभाव आदर सहित, सब मिल ज्ञान प्रवीण॥13॥

ॐ ह्रीं अभिषेकोपरान्ते सिंहासने जिनबिम्ब स्थापनं करोमि।

नीर गंध आदिक सभी, द्रव्यों का ले अर्घ्य।
जिन चरणों अर्पित करें, पाने सुपद अनर्घ्य॥14॥

ॐ ह्रीं पीठ स्थित जिनायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- पूज रहे तव पाद हम, तारण-तरण जहाज।
भव-भव भ्रमण विनाशकर, पाएँ सिद्ध समाज॥15॥

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्।)

भजन-अभिषेक समय का

(तर्ज-करले जिनवर का गुणगान आई मंगल घड़ी...)

करने जिनवर का अभिषेक, आई सारी नगरी।
आई सारी नगरी, झूमे जनता सगरी।।
करने जिनवर का अभिषेक, आई सारी नगरी।।टेक।।
प्रासुक करके जल भर करके, सिर के ऊपर ढारे।
करते हम अभिषेक प्रभु का, जागे भाग्य हमारे।।
सिर पर रखकर लाए भक्त, देखो जल गगरी।
करने जिनवर का अभिषेक, आई सारी नगरी।।1।।
पाण्डुक शिला पे जिन प्रतिमा को, भाव सहित पधराए।
चार कलश चारों कोंणों पर, जल भरकर रखवाए।।
खुशियाँ छाई चारों ओर, हमारी नगरी।
करने जिनवर का अभिषेक, आई सारी नगरी।।2।।
श्री जिन बिम्ब प्रतिष्ठा करके, जिनका न्हवन कराते।
विशद भाव से गंधोदक ले, अपने माथ लगाते।।
चलो चले भाई हम सब, शिव डगरी।
करने जिनवर का अभिषेक, आई सारी नगरी।।3।।
आई सारी नगरी, झूमे जनता सगरी।।
करने जिनवर का अभिषेक, आई सारी नगरी।।टेक।।

पंचामृत अभिषेक पाठ

(शम्भू छन्द)

श्रीमत् जिनवर वन्दनीय हैं, तीन लोक में मंगलकार।
स्याद्वाद के नायक अनुपम, अनन्त चतुष्टय अतिशयकार।।
मूल संघ अनुसार विधि युत, श्री जिनेन्द्र की शुभ पूजन।
पुण्य प्रदायक सद्दृष्टि को, करने वाली कर्म शमन।।1।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं भूः स्वाहा स्नपन प्रस्तावनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्रीमत् मेरू के दर्भाक्षत, युक्त नीर से धो आसन।
मोक्ष लक्ष्मी के नायक जिन, का शुभ करके स्थापन।।

मैं हूँ इन्द्र प्रतिज्ञा कर शुभ, धारण करके आभूषण।
यज्ञोपवीत मुद्रा कंकण अरु, माला मुकुट करूँ धारण।।2।।

ॐ नमो परम शान्ताय शांतिकराय पवित्रीकृताय अहं रत्नत्रयस्वरुपं यज्ञोपवीत धारयामि मम गात्रं पवित्रं भवतु ह्रीं नमः स्वाहा।

तिलक लगाने का मंत्र

हे विबुधेश्वर! वृन्दों द्वारा, वन्दनीय श्री जिन के बिम्ब।
चरण कमल का वन्दन करके, अभिषेकोत्सव कर प्रारम्भ।।
स्वयं सुगन्धी से आये ज्यों, भ्रमर समूहों का गुंजन।
गंध अनिन्द्य प्रवासित अनुपम, का मैं करता आरोपण।।3।।

ॐ ह्रीं नवांग तिलकं अवधारयामि स्वाहा।

भू प्रच्छालन मंत्र

जो प्रभूत इस लोक में अनुपम, दर्प और बल युक्त सदैव।
बुद्धीशाली दिव्य कुलों में, जन्मे जो नागों के देव।।
मैं समक्ष उनके शुभ अनुपम, करने हेतू संरक्षण।
स्नपन भूमि का करता हूँ, अमृतजल से प्रच्छालन।।4।।

ॐ ह्रीं जलेन भूमि शुद्धिं करोमि स्वाहा।

पीठ प्रच्छालन मंत्र

इन्द्र क्षीर सागर के निर्मल, जल प्रवाह वाला शुभ नीर।
हरता है संसार ताप को, काल अनादि जो गम्भीर।।
जिनवर के शुभ पाद पीठ का, प्रच्छालन करता कई बार।
हुआ उपस्थित उसी पीठ को, प्रच्छालित मैं करूँ सम्हार।।5।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन पीठप्रक्षालनं करोमि स्वाहा।

श्री कारलेखन मंत्र

श्री सम्पन्न शारदा के मुख, से निकले जो अतिशयकार।
विघ्नों का नाशक करता है, सदा सभी का मंगलकार।।
स्वयं आप शोभा से शोभित, वर्ण रहा पावन श्रीकार।
श्री जिनेन्द्र के भद्रपीठ पर, लिखता हूँ मैं अपरम्पार।।6।।

ॐ ह्रीं पाण्डुकशिला पीठे श्रीकारलेखनं करोमि स्वाहा।

अग्नि प्रज्ज्वलन क्रिया

दोहा- मोह रूप वन दहन में, पावन रहे समर्थ।
अग्नि प्रज्ज्वलन कर रहे, हम पूजा के अर्थ।।7।।

ॐ ह्रीं ज्ञानोद्योताय नमः स्वाहा।

दश दिग्पाल आह्वान

इन्द्र अग्नि यम नैऋत पावन, वरुण पवन कुबेरैशान।
धरणेन्द्र सोम सभी जिनवर का, करो न्हवन तुम महति महान।।
अपने-अपने अनुचर सारे, अपने सब चिन्हों के साथ।
करो भेंट स्वीकार यहाँ सब, जिन पद आप झुका कर माथ।।8।।

दशदिक्पाल के मंत्र

ॐ आं क्रौं ह्रीं इन्द्र आगच्छ-आगच्छ इन्द्राय स्वाहा।।1।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं अग्ने आगच्छ-आगच्छ आग्नेय स्वाहा।।2।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं यम आगच्छ-आगच्छ यमाय स्वाहा।।3।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं नैऋत आगच्छ-आगच्छ नैऋताय स्वाहा।।4।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं वरुण आगच्छ-आगच्छ वरुणाय स्वाहा।।5।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पवन आगच्छ-आगच्छ पवनाय स्वाहा।।6।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं कुबेर आगच्छ-आगच्छ कुबेराय स्वाहा।।7।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं ऐशान आगच्छ-आगच्छ ऐशानाय स्वाहा।।8।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं धरणेन्द्र आगच्छ-आगच्छ धरणेन्द्राय स्वाहा।।9।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं सोम आगच्छ-आगच्छ सोमाय स्वाहा।।10।।

दशदिक्पालों का अर्घ्य

तीन लोक के नाथ कहे जो, केवलज्ञानी महति महान।
दस प्रकार के धर्म की वृष्टी, तीन लोक में करें प्रधान।।
गुण रत्नों के कहे महार्णव, जिनपद चढ़ा रहे हम अर्घ्य।
'विशद' कुसुम अक्षत आदिक का, अर्घ्य चढ़ा पद पाओ अनर्घ्य।।9।।

ॐ ह्रीं इन्द्रादि दशदिग्पालेभ्यो इदं अर्घ्यं पाद्यं दीपं धूपं चरुं बलि स्वस्तिकं अक्षतं यज्ञ भागं च यजामहे प्रतिगृहतां प्रति गृहतां स्वाहा।

क्षेत्रपाल का अर्घ्य

भो! क्षेत्रपाल हो रक्षपाल, तुम जिन शासन के महति महान।
गुण चन्दन तेलादि धूप ले, वसु द्रव्य से करते सम्मान।।

यज्ञ भाग ले करें अर्चना, श्री जिनेन्द्र का मंगलगान।
जिनाभिषेक पूजा विधान में, आके पाओ निज स्थान।।10।।

ॐ आं क्रों अत्रस्थ विजयभद्रादि पञ्च क्षेत्रपाल इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं दीपं चरूं वलिं स्वस्तिकं अक्षतं यज्ञ भागं च यजा महे प्रतिग्रहतां-प्रतिग्रहतामीति स्वाहा।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत)

जिनबिम्ब स्थापन मंत्र

गिरि सुमेरु के अग्रभाग में, पाण्डुक शिला का है स्थान।
श्री आदि जिन का पहले ही, इन्द्र किए अभिषेक महान्।।
कल्याणक का इच्छुक मैं भी, जिन प्रतिमा का स्थापन।
अक्षत जल पुष्पों से पूजा, भाव सहित करता अर्चन।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वर्णे प्रतिमास्थापनं करोमि स्वाहा।

अर्घ्य

निर्मल जल परिमल चंदन अरु, श्री को सुखकर ले अक्षत।
श्रेष्ठ सुगन्धित पुष्प सु चरू शुभ, शुद्ध बनाए अमृतवत्।।
सुर भवनों को करें प्रकाशित, ऐसे लेकर दीप महान।
श्रेष्ठ सुगन्धित धूप और फल, से जिन का करते गुणगान।।13।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वर्णे जिनबिम्ब स्थापना करोमि अर्घ्यं निर्व.

(चारों दिशा में चार कलश स्थापन मंत्र)

उत्तमोत्तम पल्लव से अर्चित, कहे गये जो महति महान्।
स्वर्ण और चाँदी ताँबे अरु, रांगा निर्मित कलश महान्।।
चार कलश चारों कोणों पर, जल पूरित ज्यों चउ सागर।
ऐसा मान करूँ स्थापन, भक्ति से मैं अभ्यन्तर।।12।।

ॐ ह्रीं स्वस्त्ये चतुः कोणेषु चतुः कलश स्थापनं करोमि स्वाहा।

(जल से अभिषेक करें)

श्री जिनेन्द्र के चरण दूर से, नम्र हुए इन्द्रों के भाल।
मुकुट मणी में लगे रत्न की, किरणच्छवि से धूसर लाल।।
जो प्रस्वेद ताप मल से हैं, मुक्त पूर्ण श्री जिन भगवान।
भक्ति सहित प्रकृष्ट नीर से, मैं करता अभिषेक महान्।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन जिनाभिषेचयामि स्वाहा।

दोहा जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके "विशद" पावन अर्घ्य चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो जलेन अभिषेकान्ते अर्घ्यं नि. स्वाहा।

इक्षुरसाभिषेक

इन्द्र अञ्जली बद्ध शीश पर, रख के अपने दोनों हाथ।
श्री जिनेन्द्र के चरण झुकाते, भक्ति भाव से अपना माथ॥
तुरत पेलकर इच्छूरस से, शीश पे देते हे प्रभु! धार।
नाथ! आप हो करुणाकारी, करो सभी का प्रभु उद्धार॥15॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरइक्षुरसेन जिनाभिषेचयामिति स्वाहा।

दोहा जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके विशद, पावन अर्घ्य चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो इक्षु रसेन अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शर्करा रसाभिषेक

रजो विलाश कर्पूर पिष्ट शुभ, मधुर शर्करा रस शुभकार।
मोक्षरमा के स्वामी जिन के, शीश पे देते पावनधार॥

ॐ ह्रीं...शर्करा रसेनाभिसिंचयामि स्वाहा।

दोहा जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके "विशद" पावन अर्घ्य चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो शर्करा रसेन अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नारियल रसाभिषेक

स्वच्छ नारियल का जल शीतल, जो पवित्र है शुभ मनहार।
लोकालोक प्रकाशी जिनका, न्हवन कराते मंगलकार॥

ॐ ह्रीं...नारियल रसेन जिनाभिसिंचयामि स्वाहा।

दोहा जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके "विशद" पावन अर्घ्य चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो नारियल रसेन अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दाड़िम रसाभिषेक

दाड़िम के दाने मोती सम, श्रेष्ठ पक्व लेकर मनहार।
तुरत पेलकर रस ले पावन, न्हवन कराते अतिशयकार॥

ॐ ह्रीं...दाड़िम रसेनजिनाभिसिंचयामि स्वाहा।

दोहा जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके "विशद" पावन अर्घ्य चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो दाड़िम रसेन अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आम्र रसाभिषेक

पके आम का रस ले मीठा, शोभित होवे स्वर्ण समान।
श्री जिनेन्द्र के शीश पे देते, जिसकी धारा महति महान॥

ॐ ह्रीं...आम्र रसेनाभिसिंचयामि स्वाहा।

दोहा जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके "विशद", पावन अर्घ्य चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो आम्र रसेन अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

फल रसाभिषेक

वीतराग जिन बिम्ब मनोहर, तीन लोक में मंगलकार।
पक्व...के रस द्वारा, देते जिनके शीश पे धार॥

ॐ ह्रीं...रसेनाभिसिंचयामि स्वाहा।

दोहा जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके "विशद", पावन अर्घ्य चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो आम्र रसेन अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

घृताभिषेक

श्रेष्ठ वर्ण कंचन सम सुन्दर, देह प्रभा जिनकी शुभकार।
अनुपमेय गुण रहे मनोहर, अर्हन्तों के मंगलकार॥
नमस्कार कर शीश पे देते, हैं हम जिन के घृत की धार।
परम सुगन्धी वाला होता, वातावरण श्रेष्ठ मनहार॥16॥

ॐ ह्रीं.....घृताभिषेकं करोमिति स्वाहा।

दोहा जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके विशद पावन अर्घ्य चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो घृताभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दुग्धाभिषेक

पूर्ण चन्द्रमा की किरणों सम, धवल दुग्ध से देते धार।
जिनके यश की गौरव गरिमा, फैल रही है अतिशयकार।।
कल्पवृक्ष समनाथ! आप हैं, भवि जीवों को फल दातार।
अतः आपके चरण कमल में, वन्दन करते बारम्बार।।17।।

ॐ ह्रीं.....दुग्धाभिषेकं करोमीति स्वाहा।

दोहा जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके विशद, पावन अर्घ्य चढ़ाय।।

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो दुग्धाभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दध्याभिषेक

क्षीर सिन्धु से उठी तरंगें, फैन राशि सम आभावान।
उससे सुन्दर दधि की धारा, शीश पे जिन के करें महान।।
मन वाञ्छित फल देने वाली, श्री जिनेन्द्र की भक्ति अपार।
जिन चरणों में भक्त स्वतः ही, फल पाते हैं विस्मयकार।।18।।

ॐ ह्रीं..... दध्याभिषेकं करोमीति स्वाहा।

दोहा जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके विशद पावन अर्घ्य चढ़ाय।।

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो दध्याभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सर्वौषधिअभिषेक

दही दूध घृत इच्छूरस से, जिनवर का करके अभिषेक।
उबटन करकालेय सुकुंकुम, सर्व मिलाकर करके एक।।
मिश्रित कर उज्जवल सर्वौषधि, से धारा देते जिनशीश।
शीश झुकाकर वन्दन करते, पाने को हम भी आशीष।।19।।

ॐ ह्रीं....सर्वौषधि जिनाभिषेकं करोमीति स्वाहा।

दोहा जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके विशद, पावन अर्घ्य चढ़ाय।।

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो सर्वौषधिअभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(चार कलश से अभिषेक करें)

इष्ट मनोरथ रहे सैकड़ों, उनकी शोभा धारे जीव।
पूर्ण सुवर्ण कलशा लेकर शुभ, लाए अनुपम श्रेष्ठ अतीव।।
भव समुद्र के पार हेतु हैं, सेतु रूप त्रिभुवन स्वामी।
करता हूँ अभिषेक भाव से, श्री जिनेन्द्र का शिवगामी।।20।।

ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपालसंतं वृषभादि वर्धमानांतंचतुर्विंशति तीर्थंकरपरमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखंडे....देशे....नाम.....नगरे.....एतद्.....जिनचैत्यालये वीर नि. सं..... मासोत्तममासे....मासे....पक्षे....तिथौ.....वासरे प्रशस्त ग्रहलग्र होरायां मुनिआर्यिका-श्रावक- श्राविकाणाम् सकलकर्मक्षयार्थं चतुः कलशेन जलेनाभिषेकं करोमि स्वाहा। इति जलस्नपनम्।

चन्दन लेपन

तीन लोक में पुण्य प्रदायक, चन्दन को केसर में गार।
करते हैं जिनबिम्बों में हम, श्रेष्ठ विलेपन मंगलकार।।
निज गुण पाने का जागे अब, हे जिनेन्द्र मेरा सौभाग्य।
नाथ! आपके गुण सौरभ से, विशद जगाए हम भी भाग्य।।21।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं जिनबिम्बोपरि चन्दन विलेपनं करोमि स्वाहा।

पुष्पवृष्टि

द्वादश योजन तक सुगन्ध जो, फैलाते हैं पुष्प पराग।
पुष्प वृष्टि करते हैं पावन, जिन चरणों में धर अनुराग।।
मोक्ष मार्ग की सिद्धी पाने, करें भाव से हे प्रभु! ध्यान।
'विशद' भाव से नाथ! आपका, करते हैं पावन गुणगान।।22।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं जिनबिम्बोपरि पुष्प वृष्टिं करोमि स्वाहा।

(सुगंधित कलशाभिषेक करें)

जिनके शुभ आमोद के द्वारा, अन्तराल भी भली प्रकार।
चतुर्दिशा का परम सुवासित, हो जाता है शुभ मनहार।।
चार प्रकार कर्पूर बहुल शुभ, मिश्रित द्रव्य सुगन्धीवान।
तीन लोक में पावन जिन का, करता मैं अभिषेक महान्।।23।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन पूर्णसुगंधितकलाशाभिषेकेन जिनाभिषेचयामि स्वाहा।

दोहा जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके विशद पावन अर्घ्य चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो सुगंधित कलश अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ऋषिमण्डल यंत्राभिषेक

ऋषीमण्डल शुभ यंत्र का, करते शुभ अभिषेक।
रोग शोक सब दूर हो, जागे विशद विवेक॥

ॐ ह्रीं पवित्रतर जलेन ऋषिमण्डल यंत्र अभिषेकं करोमि इति स्वाहा।

मंगल आरती अवतरण

रखे पात्र में श्री फल उज्ज्वल, अक्षत पुष्प मनोहर दीप।
इत्यादिक से सज्जित थाली, मंगलमय हम लाए समीप॥
काम दाह के नाशक हे जिन, सर्व सुखों के तुम आलय।
'विशद' आरती करते हैं हम, आके अनुपम देवालय॥

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हत्परमेष्ठिने नमः मंगल आरती अवतरणम् करोमि स्वाहा।

गंधोदक

जिनाभिषेक का गंधोदक शुभ, मुक्ति श्री के उदक समान।
पुण्यांकुर उत्पन्न करे जो, सुर नरेन्द्र सब वैभववान॥
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण की, लता की वृद्धी का कारण।
कीर्ति लक्ष्मी जय का साधक, 'विशद' रहा जो निस्कारण॥25॥

मस्तकोपरि गंधोदक धारयामि इति स्वाहा।

लघु शांतिधारा

वीतराग जगनेत्रम्, सर्वज्ञं सर्वदर्शकं विशद शांतिप्रदायकं स्यात् शांतिधारा करोम्यम्। ॐ नमः सिद्धेभ्यः। श्री वीतरागाय नमः। ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पार्श्वतीर्थंकराय द्वादशगणपरिवेष्टिकाय, शुक्ल ध्यान पवित्राय, सर्वज्ञाय, स्वयं भुवे, सिद्धाय, बुद्धाय, परमात्मने, परम सुखाय, त्रैलोक्य महीव्याप्ताय, अनन्त संसार चक्रपरिमर्दनाय, अनन्त दर्शनाय, अनन्त ज्ञानाय, अनन्त वीर्याय, अनन्त सुखाय, त्रैलोक्यवशंकराय, सत्यज्ञानाय, सत्यब्रह्मणे, धरणेन्द्र

फणामंडल मण्डिताय, ऋष्यार्यिका-श्रावक-श्राविका प्रमुख चतुस्संघोपसर्ग विनाशनाय, घातिकर्म विनाशनाय, अघातिकर्म विनाशनाय, अपवायं अस्माकं... छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **मृत्यु** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **अतिकामं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **रतिकामं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **क्रोधं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **अग्निभयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वशत्रुं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वोपसर्गं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वविघ्नं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वभयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वराजभयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वचौरभयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वदुष्टभयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वमृगभयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वात्मचक्रभयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वपरमंत्र** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वशूल रोगं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वक्षय रोगं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वकुष्ठ रोगं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वक्रूर रोगं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वनरमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वगजमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वाश्वमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वगोमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वमहिषमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वधान्यमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्ववृक्षमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वगुल्ममारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वपत्रमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वपुष्पमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वफलमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वराष्ट्र मारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्व देशमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्व विषमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्ववेताल शाकिनी** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्ववेदनीयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वमोहनीयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वकर्माष्टकं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद।

ॐ सुदर्शन-महाराज-मम-चक्र विक्रम-तेजो-बल शौर्य-वीर्य शान्तिं कुरु-कुरु। सर्व जनानन्दनं कुरु-कुरु। सर्वं भव्यानंदनं कुरु-कुरु। सर्व गाकुलानन्दनं कुरु-कुरु। सर्व ग्राम नगर खेट कर्वट मटंब पत्तन द्रोणमुख संवाहनन्दनं कुरु-कुरु। सर्व लोकानन्दनं कुरु-कुरु। सर्व देशानंदनं कुरु-कुरु। सर्व यजमानन्दनं कुरु-कुरु। सर्व दुःख हन-हन, दह-दह, पच-पच, कुट-कुट, शीघ्रं-शीघ्रं।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याधि-व्यसन-वर्जितं।
अभयं क्षेम-मारोग्यं स्वस्ति-रस्तु विधीयते॥

श्री शांति-मस्तु! कुल-गोत्र-धन-धान्यं सदास्तु। चन्द्रप्रभ-वासुपूज्य-मल्लि-वर्द्धमान-पुष्पदंत-शीतल-मुनिसुव्रतस्त-नेमिनाथ-पार्श्वनाथ-इत्येभ्यो नमः।

इत्यनेन मंत्रेण नवग्रहाणां शान्त्यर्थं गंधोदक धारा-वर्षणम्।

शांति मंत्र-ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेष दोष कल्मषाय दिव्य तेजो मूर्तये नमः श्री शान्तिनाथ शान्ति कराय सर्व विघ्न प्रणाशनाय सर्व रोगापमृत्यु विनाशनाय सर्व पर कृच्छ्रोपद्र विनाशनाय सर्व क्षामडामर विघ्न विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम सर्व देशस्य सर्व राष्ट्रस्य सर्व संघस्य तथैव सर्व शान्ति तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।

शांति शिरोधृत जिनेश्वर शासनानां। शांतिः निरन्तर तपोभव भावितानां॥
शांतिः कषाय जय जृम्भित वैभवानां। शांतिः स्वभाव महिमान मुपागतानां॥

संपूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्र सामान्य तपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिं भगवान जिनेन्द्रः॥
अज्ञान महातम के कारण, हम व्यर्थ कर्म कर लेते हैं।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, प्रभु जल की धारा देते हैं॥

अर्घ-जल गंधाक्षत पुष्पचरु फल, दीप धूप का अर्घ्य बनाय।
'विशद' भाव से शांति धार दे, श्री जिनपद में दिया चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं श्री क्लीं त्रिभुवनपते शान्तिधारां करोमि नमोऽर्हते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सर्व आचार्यों का अर्घ्य

आदि सिन्धु शांती सागर जी, महावीर कीर्ति पद वन्दन।
वीर सिन्धु शिव धर्म विमल पद, विद्यानन्द पद करूँ नमन॥
भरत सिन्धु सन्मति सागर जी, पुष्पदन्त विद्यासागर।
विराग सिन्धु कुन्थु सागर पद, विशद नमन मेरा सादर॥

ॐ ह्रूँ आचार्य श्री आदि सागर जी शांतिसागर जी परंपरागत सर्व आचार्य परमेष्ठी चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प.पू. आचार्य गुरुवर श्री विशद सागर जी का अर्घ्य

पिच्छी कमण्डलधारी गुरुवर, केशलोंच जो करते हैं।
छत्तिस मूलगुणों के धारी, बाईस परीषह सहते हैं॥

आत्म ध्यान जो करते रहते, भेद ज्ञान प्रगटाते हैं।
पूजा विधान अनेकों रचकर, भक्तों से करवाते हैं॥
विशाल हृदय के धारी गुरुवर, सबके संकट हरते हैं।
हाथ जोड़कर विशद गुरु को, नमन सभी हम करते हैं॥

ॐ ह्रूं साहित्य रत्नाकर क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशद सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिषेक समय की आरती

(तर्ज-आनन्द अपार है)

जिनवर का दरबार है, भक्ती अपरम्पार है।
जिनबिम्बों की आज यहाँ पर, होती जय-जयकार है।टेक॥
दीप जलाकर आरति लाए, जिनवर तुमरे द्वार जी।
भाव सहित हम गुण गाते हैं, हो जाए उद्धार जी॥1॥जिनवर...
मिथ्या मोह कषायों के वश, भव सागर भटकाए हैं।
होकर के असहाय प्रभू जी, द्वार आपके आए हैं॥2॥जिनवर...
शांती पाने श्री जिनवर का, हमने न्हवन कराया जी।
तारण तरण जानकर तुमको, आज शरण में आया जी॥3॥जिनवर...
हम भी आज शरण में आकर, भक्ती से गुण गाते हैं।
भव्य जीव जो गुण गाते वह, अजर अमर पद पाते हैं॥4॥जिनवर...
नैय्या पार लगा दो भगवन्, तव चरणों सिरनाते हैं।
'विशद' मोक्ष पद पाने हेतू, सादर शीश झुकाते हैं॥5॥जिनवर...

लघु विनय पाठ-1 - दोहा

पूजा विधि से पूर्व यह, पढ़ें विनय से पाठ।
धन्य जिनेश्वर देवजी, कर्म नशाए आठ॥1॥
शिव वनिता के ईश तुम, पाए केवल ज्ञान।
अनन्त चतुष्टय धारते, देते शिव सोपान॥2॥
पीड़ा हारी लोक में, भव-दधि नाशनहार।
ज्ञायक हो त्रयलोक के, शिवपद के दातार॥3॥

धर्मामृत दायक प्रभो!, तुम हो एक जिनेन्द्र।
चरण कमल में आपके, झुकते विनत शतेन्द्र।।4।।
भविजन को भवसिन्धु में, एक आप आधार।
कर्म बन्ध का जीव के, करने वाले क्षार।।5।।
चरण कमल तव पूजते, विघ्न रोग हों नाश।
भवि जीवों को मोक्ष पथ, करते आप प्रकाश।।6।।
यह जग स्वारथ से भरा, सदा बढ़ाए राग।
दर्श ज्ञान दे आपका, जग को विशद विराग।।7।।
एक शरण तुम लोक में, करते भव से पार।
अतः भक्त बन के प्रभो!, आया तुमरे द्वार।।8।।

मंगल पाठ

मंगल अर्हत् सिद्ध जिन, आचार्योपाध्याय संत।
धर्मागम की अर्चना, से हो भव का अंत।।9।।
मंगल जिनगृह बिम्ब जिन, भक्ती के आधार।
जिनकी अर्चा कर मिले, मोक्ष महल का द्वार।।10।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत।।

अथ पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय। नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

ॐ ह्रीं अनादिमूल मंत्रेभ्योनमः। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो, धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहन्ता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो, धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि शरणं पव्वज्जामि, अरिहंते शरणं पव्वज्जामि, सिद्धे शरणं
पव्वज्जामि, साहू शरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं, धम्मं शरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

मंगल विधान

शुद्धाशुद्ध अवस्था में कोई, णमोकार को ध्याये।
पूर्ण अमंगल नशे जीव का, मंगलमय हो जाए।
सब पापों का नाशी है जो, मंगल प्रथम कहाए।
विघ्न प्रलय विषनिर्विष शाकिनि, बाधा ना रह पाए।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अर्घ्यावली

जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल साथ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले, पूज रहे जिन नाथ।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान निर्वाण पंच कल्याणेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधूभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टाधिक सहस्त्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं श्री द्वादशांगवाणी प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं ढाईद्वीप स्थित त्रिऊन नव कोटि मुनि चरणकमलेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।5।।

"पूजा प्रतिज्ञा पाठ"

अनेकांत स्याद्वाद के धारी, अनन्त चतुष्टय विद्यावान।
मूल संघ में श्रद्धालू जन, का करने वाले कल्याण।
तीन लोक के ज्ञाता दृष्टा, जग मंगलकारी भगवान।
भाव शुद्धि पाने हे स्वामी!, करता हूँ प्रभु का गुणगान।।1।।
निज स्वभाव विभाव प्रकाशक, श्री जिनेन्द्र हैं क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों के, विस्तृत ज्ञानी हे भगवान!

हे अर्हन्त! अष्ट द्रव्यों का, पाया मैंने आलम्बन।
होकर के एकाग्रचित्त मैं, पुण्यादिक का करूँ हवन॥2॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञायै जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलि क्षिपामि।

"स्वस्ति मंगल पाठ"

ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनेश।
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजूँ तीर्थेश॥
विमलानन्त धर्म शांती जिन, कुन्थु अरह मल्ली दें श्रेय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वीर के पद में स्वस्ति करेय॥

इति श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर स्वस्ति मंगल विधानं पुष्पांजलिं क्षिपामि।

"परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ"

ऋषिवर ज्ञान ध्यान तप करके, हो जाते हैं ऋद्धीवान।
मूलभेद हैं आठ ऋद्धि के, चौंसठ उत्तर भेद महान॥
बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, जिनको पाके ऋद्धीवान।
निस्पृह होकर करें साधना, 'विशद' करें स्व पर कल्याण॥1॥
ऋद्धि विक्रिया ग्यारह भेदों, वाले साधू ऋद्धीवान।
नौं भेदों युत चारण ऋद्धी, धारी साधू रहे महान॥
तप ऋद्धी के भेद सात हैं, तप करते साधू गुणवान।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारी साधू रहे प्रधान॥2॥
भेद आठ औषधि ऋद्धि के, जिनके धारी सर्व ऋशीष।
रस ऋद्धी के भेद कहे छह, रसास्वाद शुभ पाए मुनीश॥
ऋद्धि अक्षीण महानस एवं, ऋद्धि महालय धर ऋषिराज।
जिनकी अर्चा कर हो जाते, सफल सभी के सारे काज॥3॥

॥ इति परमर्षि-स्वस्ति-मंगल-विधानं॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

श्री देव शास्त्र गुरु पूजन

स्थापना (दोहा)

देव-शास्त्र-गुरु पद नमन, विद्यमान तीर्थेश।
सिद्ध प्रभु निर्वाण भू, पूज रहे अवशेष॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल छन्द)

जल के यह कलश भराए, त्रय रोग नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥1॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

शुभ गंध बनाकर लाए, भवताप नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥2॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व.स्वाहा।

अक्षत हम यहाँ चढ़ाएँ, अक्षय पदवी शुभ पाएँ
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥3॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व.स्वाहा।

सुरभित ये पुष्प चढ़ाएँ, रुज काम से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥4॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन नैवेद्य चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥5॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत का ये दीप जलाएँ, अज्ञान से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥6॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥7॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे फल यहाँ चढ़ाएँ, शुभ मोक्ष महाफल पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥8॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन ये अर्घ्य चढ़ाएँ, हम पद अनर्घ्य प्रगटाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥9॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांती धारा कर मिले, मन में शांति अपार।
अतः भाव से आज हम, देते शांती धार॥

॥ शान्तये शांतिधारा ॥

दोहा- पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, लिए पुष्प यह हाथ।
देव शास्त्र गुरु पद युगल, झुका रहे हम माथ॥

॥ पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

"अर्घ्यावली"

दोष अठारह से रहित प्रभु, छियालिस गुणवान।
देव श्री अर्हन्त का, करते हम गुणगान॥1॥

ॐ ह्रीं षट् चत्त्वारिंशत गुण विभूषित अष्टादश दोष रहित श्री अरिहंत सिद्ध जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिन के सर्वांग से, खिरे दिव्य ध्वनि श्रेष्ठ।
द्वादशांग मय पूजते, लेकर अर्घ्य यथेष्ठ॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीजिन मुखोद्भूत सरस्वती देव्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विषयाशा त्यागी रहे, ज्ञान ध्यान तपवान।
संगारम्भ विहीन पद, करें विशद गुणगान॥3॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्य उपाध्याय साधु परमेष्ठी चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- देव-शास्त्र-गुरु के चरण, वन्दन करें त्रिकाल।
'विशद' भाव से आज हम, गाते हैं जयमाल॥

(तामरस छंद)

जय-जय-जय अरहंत नमस्ते, मुक्ति वधू के कंत नमस्ते।
कर्म घातिया नाश नमस्ते, केवलज्ञान प्रकाश नमस्ते।

जगती पति जगदीश नमस्ते, सिद्ध शिला के ईश नमस्ते।
वीतराग जिनदेव नमस्ते, चरणों विशद सदैव नमस्ते॥
विद्यमान तीर्थेश नमस्ते, श्री जिनेन्द्र अवशेष नमस्ते।
जिनवाणी ॐकार नमस्ते, जैनागम शुभकार नमस्ते।
वीतराग जिन संत नमस्ते, सर्वसाधु निर्ग्रन्थ नमस्ते।
अकृत्रिम जिनबिम्ब नमस्ते, कृत्रिम जिन प्रतिबिम्ब नमस्ते।
दर्श ज्ञान चारित्र नमस्ते, धर्म क्षमादि पवित्र नमस्ते।
तीर्थ क्षेत्र निर्वाण नमस्ते, पावन पञ्चकल्याण नमस्ते।
अतिशय क्षेत्र विशाल नमस्ते, जिन तीर्थेश त्रिकाल नमस्ते।
शाश्वत तीरथराज नमस्ते, 'विशद' पूजते आज नमस्ते॥

दोहा- अर्हतादि नव देवता, जिनवाणी जिन संत।
पूज रहे हम भाव से, पाने भव का अंत॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- देव-शास्त्र-गुरु पूजते, भाव सहित जो लोग।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य पा, पावें शिव का योग॥

॥ इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत) ॥

समुच्चय अर्घ्य

अष्टम वसुधा पाने को यह, अर्घ्य बनाकर लाए हैं।
अष्टगुणों की सिद्धी पाने, तव चरणों में आए हैं॥
णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्त्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष॥
देव शास्त्र गुरु धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित पंचकल्याणक पदालंकृत सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सोलहकारण-रत्नत्रय-दशधर्म, पंच मेरू-नन्दीश्वर त्रिलोक सम्बन्धी समस्त कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, सिद्ध क्षेत्र अतिशय क्षेत्र तीस चौबीसी, विद्यमान बीस तीर्थंकर तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टापद तीर्थ जिनालय स्थित समुच्चय पूजा

स्थापना

अष्टापद से शिव पद पाए, ऋषभ देव का मुक्ती धाम।
जिसकी प्रतिकृति बनी यहाँ पर, जिसका है अष्टापद नाम॥
लाल वर्ण की पावन प्रतिमा, भरत बाहुबली भी हैं साथ।
मानस्तंभ शोभता आगे, झुका रहे हैं अपना माथ॥
दोहा- सहस्रकूट पावन रहा, हैं चौबीस भगवान।
भक्ति भाव से आज हम, करते हैं आह्वान॥

ॐ ह्रीं अष्टापद तीर्थ स्थित श्री आदिनाथ भरत-बाहुबली पार्श्वनाथ सहस्रकूट मानस्तंभ विराजित सर्व जिन बिम्ब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(वीर छन्द)

भव सिन्धू की कर्म लहर से, भव में ना भटकाएँ हम।
चरण कमल में जल अर्पण कर, जन्म जरादि नशाएँ हम॥
तीर्थ क्षेत्र अष्टापद पावन, जिसकी महिमा गाएँ हम।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, सादर शीश झुकाए हम॥1॥

ॐ ह्रीं अष्टापद तीर्थ जिनालय स्थित सर्व जिनबिम्बेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधादिक जो रही कषाएँ, उनसे मुक्ती पाएँ हम।
सुरभित चंदन चर्चित करके, भव सन्ताप नशाएँ हम॥
तीर्थ क्षेत्र अष्टापद पावन, जिसकी महिमा गाएँ हम।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, सादर शीश झुकाए हम॥2॥

ॐ ह्रीं अष्टापद तीर्थ जिनालय स्थित सर्व जिनबिम्बेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

जागे है सौभाग्य हमारे, तव दर्शन नित पाएँ हम।
अक्षत धवल चढ़ाकर चरणों, अक्षय पदवी पाए हम॥
तीर्थ क्षेत्र अष्टापद पावन, जिसकी महिमा गाएँ हम।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, सादर शीश झुकाए हम॥3॥

ॐ ह्रीं अष्टापद तीर्थ जिनालय स्थित सर्व जिनबिम्बेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम जयी हे नाथ! आपकी, अतिशय महिमा गाएँ हम।
जल भूमिज षट् ऋतु के सुरभित, चरणों पुष्प चढ़ाएँ हम॥
तीर्थ क्षेत्र अष्टापद पावन, जिसकी महिमा गाएँ हम।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, सादर शीश झुकाए हम॥4॥

ॐ ह्रीं अष्टापद तीर्थ जिनालय स्थित सर्व जिनबिम्बेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

षट् रस व्यंजन से अर्चाकर, झूमें नाचे गाएँ हम।
क्षुधा शांत करने को स्वामी, तव चरणों में आए हम॥
तीर्थ क्षेत्र अष्टापद पावन, जिसकी महिमा गाएँ हम।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, सादर शीश झुकाए हम॥5॥

ॐ ह्रीं अष्टापद तीर्थ जिनालय स्थित सर्व जिनबिम्बेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर ने घेरा हमको, उसको अब विनशाएँ हम।
रत्नमयी शुभ घृत का दीपक, चरणों नाथ जलाएँ हम॥
तीर्थ क्षेत्र अष्टापद पावन, जिसकी महिमा गाएँ हम।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, सादर शीश झुकाए हम॥6॥

ॐ ह्रीं अष्टापद तीर्थ जिनालय स्थित सर्व जिनबिम्बेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म ने हमें सताया, उनसे मुक्ती पाएँ हम।
मुक्ति रमा को पाने सुरभित, अग्नि में धूप जलाएँ हम॥

तीर्थ क्षेत्र अष्टापद पावन, जिसकी महिमा गाएँ हम।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, सादर शीश झुकाए हम॥7॥

ॐ ह्रीं अष्टापद तीर्थ जिनालय स्थित सर्व जिनबिम्बेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

छह ऋतुओं के सरस मनोहर, फल यह मधुर चढ़ाएँ हम।
भाव सहित हे नाथ! आपकी, अतिशय महिमा गाएँ हम॥
तीर्थ क्षेत्र अष्टापद पावन, जिसकी महिमा गाएँ हम।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, सादर शीश झुकाए हम॥8॥

ॐ ह्रीं अष्टापद तीर्थ जिनालय स्थित सर्व जिनबिम्बेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पृथक-पृथक इन अष्ट द्रव्य का, पावन अर्घ्य बनाएँ हम।
विशद भाव से हर्षित होकर, जिन पद आज चढ़ाएँ हम॥
तीर्थ क्षेत्र अष्टापद पावन, जिसकी महिमा गाएँ हम।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, सादर शीश झुकाए हम॥9॥

ॐ ह्रीं अष्टापद तीर्थ जिनालय स्थित सर्व जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- नाथ हमें अब दीजिए, पावन यह वरदान।
पावन संयम धारकर, बन जाएँ भगवान॥

॥ शान्तये शान्तिधारा ॥

दोहा- नाथ आपके नाम का, करते सब जयकार।
पुष्पांजलि करते विशद, पाने भव दधि पार॥

॥ दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

पंच कल्याणक के अर्घ्य

दोहा

तीर्थंकर पद के धनी, पाएँ गर्भ कल्याण।
अर्चा करे जो भाव से, पावे निज स्थान॥1॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणक प्राप्त मूलनायक श्री....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमा जन्म कल्याण की, होती अपरम्पार।
पूजा कर सुर नर मुनी, करे आत्म उद्धार॥2॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणक प्राप्त मूलनायक श्री....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप कल्याणक प्राप्त कर, करें साधना घोर।
कर्म काठ को नाशकर, बढ़ें मुक्ति की ओर॥3॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणक प्राप्त मूलनायक श्री....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रगटाते निज ध्यान कर, जिनवर केवलज्ञान।
स्व-पर उपकारी बने, तीर्थंकर भगवान॥4॥

ॐ ह्रीं केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त मूलनायक श्री....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्म विनाश कर, पाते पद निर्वाण।
भव्य जीव इस लोक में, करें विशद गुणगान॥5॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणक प्राप्त मूलनायक श्री....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- अष्टापद शुभ तीर्थ की, महिमा रही महान।
जयमाला गाते यहाँ, करते हैं गुणगान॥

(टप्पा चाल)

प्रथम तीर्थंकर इस युग के हैं, आदिनाथ भाई।
षट् कर्मों का किए प्रवर्तन, भविजन सुखदाई॥
जिनेश्वर पूजो हो भाई॥टेक॥

कर्म घातियाँ नाश किए प्रभु, विशद ज्ञान पाई।
कर्म नाशकर अष्टापद से, पाए शिव भाई।।
जिनेश्वर पूजो हो भाई।।1।।
चक्री भरत ने त्रैकालिक शुभ, चौबीसी भाई।
रत्नमयी देवों से रक्षित, पावन बनवाई।
जिनेश्वर पूजो हो भाई।।2।।
ब्रह्मचारी श्री धर्मचन्द के, भाव हुए भाई।
अष्टापद रचना बनवाएँ, कृत्रिम अतिशायी।।
जिनेश्वर पूजो हो भाई।।3।।
भरत बाहुबली आदिनाथ जी, मध्य रहे भाई।
चौवीसी है धवल रंग की, जगत पूज्य गाई।।
जिनेश्वर पूजो हो भाई।।4।।
सहस कूट की पावन रचना, अतिशय बनवाई।
पार्श्वनाथ चैत्यालय आगे, मानस्तंभ भाई।।
जिनेश्वर पूजो हो भाई।।5।।
रत्नमयी प्रतिमाएँ पावन, हैं अनेक भाई।
जिनबिम्बों की अर्चा जग में, विशद मोक्ष दाई।।
जिनेश्वर पूजो हों भाई।।6।।

दोहा- अष्टापद शुभ तीर्थ का, किया यहाँ गुणगान।
ऋद्धि-सिद्धि समृद्धि हो, करते चरण प्रणाम।।

ॐ ह्रीं अष्टापद तीर्थ जिनालय स्थित बड़े बाबा श्री आदिनाथ सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- कर्म श्रृंखला नाश कर, हुए मोक्ष के ईश।
जिनके चरणों में विशद, झुका रहे हम शीश।।

(इत्याशीर्वाद)

अष्टापद तीर्थ स्थित ऋषभदेव पूजा

"स्थापना"

ऋषभदेव जी शिव पद पाए, तीर्थ रहा अष्टापद धाम।
जिसकी प्रतिकृति बनी यहाँ पर, जिसका है अष्टापद नाम।।
लाल वर्ण की पावन प्रतिमा, जटाजूट धारी भगवान।
उच्चादर्श उच्च वेदी पर, जग में जिनकी ऊँची शान।।
दोहा- ऋषभ चिन्ह से शोभते, ऋषभनाथ भगवान।
विशद हृदय में आपका, करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं अष्टापद तीर्थ स्थित बड़े बाबा श्री ऋषभदेव जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छन्द)

जल पिया अनादी से हमने, पर तृषा शान्त न कर पाए।
यह निर्मल नीर चढ़ाकर के, मिथ्या मल धोने हम आए।।
हम अष्टापद के बड़े बाबा, श्री ऋषभदेव को ध्याते हैं।
अब मेरे सारे दुख दर्द हरो, हम सादर शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं नमः बड़े बाबा श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम भाँति-भाँति के चन्दन से, तन अपना सतत् सजाए हैं।
जिन चरणों चन्दन चर्चित कर, भव ताप नशाने आए हैं।।
हम अष्टापद के बड़े बाबा, श्री ऋषभदेव को ध्याते हैं।
अब मेरे सारे दुख दर्द हरो, हम सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं नमः बड़े बाबा श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

निज शक्ति भूल दर-दर भटके, शास्वत पद को विसराए हैं।
अब अक्षय अखण्ड सुपद पाने, प्रभु तव चरणों में आए हैं।।

हम अष्टापद के बड़े बाबा, श्री ऋषभदेव को ध्याते हैं।
अब मेरे सारे दुख दर्द हरो, हम सादर शीश झुकाते हैं।।3।।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं नमः बड़े बाबा श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

मन्मथ माया में लीन रहे, ज्ञानामृत रस ना चख पाए।
अब स्याद्वाद के पुष्प चरण, हे नाथ! चढ़ाने को लाए।।
हम अष्टापद के बड़े बाबा, श्री ऋषभदेव को ध्याते हैं।
अब मेरे सारे दुख दर्द हरो, हम सादर शीश झुकाते हैं।।4।।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं नमः बड़े बाबा श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वहा।

हम ज्ञानानन्द स्वभावी हो, आशा तृष्णा में भटकाए।
नैवेद्य सरस यह चढ़ा रहे, निज समरस पाने को आए।।
हम अष्टापद के बड़े बाबा, श्री ऋषभदेव को ध्याते हैं।
अब मेरे सारे दुख दर्द हरो, हम सादर शीश झुकाते हैं।।5।।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं नमः बड़े बाबा श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम ज्ञाता दृष्टा होकर भी, मिथ्यात्व मोह में उलझाए।
अब सम्यक् ज्ञान प्रकट करने, यह दीप जला करके लाए।।
हम अष्टापद के बड़े बाबा, श्री ऋषभदेव को ध्याते हैं।
अब मेरे सारे दुख दर्द हरो, हम सादर शीश झुकाते हैं।।6।।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं नमः बड़े बाबा श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम धूप सुगन्धी में अटके, निज ज्ञान धूप ना प्रगटाए।
अब धूप जलाकर दर्श ज्ञान, सुख वीर्य प्रकट करने आए।।
हम अष्टापद के बड़े बाबा, श्री ऋषभदेव को ध्याते हैं।
अब मेरे सारे दुख दर्द हरो, हम सादर शीश झुकाते हैं।।7।।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं नमः बड़े बाबा श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वादिष्ट फलों के रागी हो, कर्मों के बन्ध बढ़ाए हैं।
फल ताजे यहाँ चढ़ाकर के, मुक्ती फल पाने आए हैं।।
हम अष्टापद के बड़े बाबा, श्री ऋषभदेव को ध्याते हैं।
अब मेरे सारे दुख दर्द हरो, हम सादर शीश झुकाते हैं।।8।।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं नमः बड़े बाबा श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम द्रव्य दृष्टि से शुद्ध रहे, निज का स्वरूप ना पाए हैं।
जो विशद स्वरूप रहा मेरा, हम वह प्रगटाने आए हैं।।
हम अष्टापद के बड़े बाबा, श्री ऋषभदेव को ध्याते हैं।
अब मेरे सारे दुख दर्द हरो, हम सादर शीश झुकाते हैं।।9।।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं नमः बड़े बाबा श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांती धारा से मिले, पाने अनर्घ्य पद आए।
भव्य जीव जिन भक्ति कर, पाएँ भव से पार।।

।। शान्तये शान्तिधारा ।।

दोहा- पुष्पित पुष्पों से भरे, लाए अनुपम थाल।
पुष्पांजलि करते विशद, पाने सुपद त्रिकाल।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

पंचकल्याणक के अर्घ्य

दोहा- द्वितीया कृष्ण आषाढ़ की, आदिनाथ भगवान
सर्वार्थसिद्धि से चय किए, पाए गर्भ कल्याण।।1।।
ॐ ह्रीं आषाढ़ कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्तश्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत कृष्ण नौमी प्रभू, पाए जन्म कल्याण।
शत् इन्द्रों ने न्हवन कर, किया प्रभू गुणगान।।2।।
ॐ ह्रीं चैत्र कृष्णा नवम्यां जन्मकल्याणक प्राप्तश्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नील परी की मृत्यु लख, धरे आप वैराग्य।
चैत कृष्ण नोमी तिथी, छोड़ चले सब राग।।3।।

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्णा नवम्यां तपकल्याणक प्राप्तश्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार घातिया नाशकर, पाए केवल ज्ञान।
फाल्गुन वदि एकादशी, जग में हुई महान।।4।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण एकादशी केवलज्ञान कल्याणक प्राप्तश्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ कृष्ण की चतुर्दशी, कीन्हें कर्म विनाश।
मोक्ष कल्याणक प्राप्त कर, किए सिद्ध पद वास।।5।।

ॐ ह्रीं माघ कृष्णा चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्तश्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- अष्टापद शुभ तीर्थ की, महिमा बड़ी विशाल।
महिमा गाने आपकी, गाते हैं जयमाल।।

बेसरी छन्द

काल अनादी यह कहलाया, इसका अंत कहीं न पाया।
जीव अनंतानंत कहे हैं, भव सागर में दु:ख सहे हैं।।1।।
जन्म मरण पाते दुखदायी, रागद्वेष के कारण भाई।
कर्म बंध होता है भारी, जिससे है संसार दुखारी।।2।।
भव्याभव्य कहे हैं प्राणी, ऐसा कहती है जिनवाणी।
भव्य मोक्ष की शक्ति पाते, इतर सदा संसार भ्रमाते।।3।।
सम्यक् श्रद्धा जिनके जागे, मोक्ष मार्ग में वे ही लागे।
मोक्षमार्ग रत्नत्रय जानो, वीतरागता भी पहिचानो।।4।।
जो हैं वीतरागता धारी, वह हो जाते हैं अविकारी।
निज आतम का ध्यान लगाते, जिससे कर्म निर्जरा पाते।।5।।
सर्व कर्म नशते ही प्राणी, पा लेते हैं मुक्ति रानी।
इन्द्र सभी मिलकर के आते, मोक्षकल्याणक वहाँ मनाते।।6।।
अष्टद्रव्य से पूजा करते, अपना कोष पुण्य से भरते।

भक्ति करते विस्मयकारी, सर्व जगत में मंगलकारी।।7।।
अग्नि कुमार देव भी आते, भक्ति से नख केश जलाते।
जयकारा करते है भारी, प्रभु होते हैं अतिशयकारी।।8।।
आदिम तीर्थंकर कहलाए, धर्म प्रवर्तन आप कराए।
स्वयं बोध हो संयम पाए, निज आतम का ध्यान लगाए।।9।।
कर्म घातिया आप नशाएँ, पावन केवल ज्ञान जगाए।
दिव्य देशना आप सुनाए, इस जग को सन्मार्क दिखाए।।10।।
योग रोध चौदह दिन पाएँ, अष्टापद से मोक्ष सिधाए।
सुर नर मुनि सब महिमा गाए, भक्ति से पद पूज रचाए।।11।।
दोहा- अर्चा को प्रभु आपकी, हुए आज वाचाल।
आदिनाथ भगवान की, गाई यहाँ जयमाल।।

ॐ ह्रीं अष्टापद तीर्थ स्थित बड़े बाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- रत्नत्रय को धारकर, अपनाए शिव पंथ।
यही भावना है 'विशद', पाएँ ज्ञान अनन्त।।

।। इत्याशीर्वाद ।।

समुच्चय महार्घ्य

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु के चरण नमन।
जैनागम जिन चैत्य जिनालय, जैन धर्म को शत् वन्दन।।
सोलह कारण धर्म क्षमादिक, रत्नत्रय चौबिस तीर्थेश।
अतिशय सिद्धक्षेत्र नन्दीश्वर, की अर्चा हम करें विशेष।।

दोहा- अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, 'विशद' भाव के साथ।
चढ़ा रहे त्रययोग से, झुका चरण में माथ।।

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु, सरस्वती देव्यै, सोलहकारण भावना, दशलक्षण धर्म, रत्नत्रय धर्म, त्रिलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, नन्दीश्वर, पंचमेरु सम्बन्धी चैत्य-चैत्यालय, कैलाश गिरि, सम्मेद शिखर, गिरनार, चम्पापुर, पावापुर आदि निर्वाण क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, तीस चौबीसी, तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो समुच्च महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पुष्पक्षेपण करते हुए शांति पाठ बोले)

शांतिपाठ

शांतिनाथ शांति के दाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।
परम शांत मुद्रा जो धारे, जग जीवों के तारण हारे।।
शरण आपकी जो भी आते, वे अपने सौभाग्य जगाते।
शांतिपाठ पूजा कर गाएँ, पुष्पांजलि कर शांति जगाएँ।।
जिन पद शांती धार कराएँ, जीवन में सुख शांति पाएँ।
जीवों को सुख शांति प्रदायी, धर्म सुधामृत के वरदायी।।
शांतिनाथ दुख दारिद्र नाशी, सम्यक्दर्शन ज्ञान प्रकाशी।
राजा प्रजा भक्त नर-नारी, भक्ति करें सब मंगलकारी।।
जैन धर्म जिन आगम ध्यायें, परमेष्ठी पद शीश झुकाएँ।
श्री जिन चैत्य जिनालय भाई, विशद बनें सब शांति प्रदायि।।

(शान्तयेशांतिधारा-3)

(दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्) (कायोत्सर्ग करें)

विसर्जन पाठ

भूल हुई हो जो कोई, जान के या अन्जान।
बोधि हीन मैं हूँ विशद, क्षमा करो भगवान।।
ज्ञान ध्यान शुभ आचरण, से भी हूँ मैं हीन।
सर्व दोष का नाश हो, शुभाचरण हो लीन।।
पूजा अर्चा में यहाँ, आए जो भी देव।
करूँ विसर्जन भाव से, क्षमा करो जिन देव।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

(ठोने में पुष्पक्षेपण करें)

आशिका लेने का मंत्र

पूजा कर आराध्य की, धरे आशिका शीश।
विशद कामना पूर्ण हो, पाएँ जिन आशीष।।

श्री आदिनाथ पूजन

(स्थापना)

जो कर्म भूमि के समय श्रेष्ठ, षट्कर्मों का उपदेश किए।
तुम ऋषी बनो या कृषी करो, जीवों को यह संदेश दिए।।
ऐसे श्री ऋषभ देव स्वामी, जो धर्म प्रवर्तक कहलाए।
हम आदिनाथ का आह्वानन, करने को चरणों में आए।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इति आहवाननं। ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(सखी छन्द)

यह कलश में जल भर लाए, जल धार कराने आए।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

केशर चन्दन में गारा, भव ताप नाश हो सारा।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षय से पूजा रचाएँ, अक्षय पदवी को पाएँ।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं निर्व. स्वाहा।

यह पुष्प चढ़ा हर्षाएँ, हम काम रोग विनशाएँ।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

नैवेद्य चढ़ाने लाए, अब क्षुधा नशाने आए।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

है मोह कर्म का नाशी, ये दीपक ज्ञान प्रकाशी।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, कर्मों से मुक्ती पाएँ।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल सरस चढ़ाने लाए, मुक्ती फल पाने आए।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।

वसु द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, पावन अनर्घ्य पद पाएँ।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- शांतीधारा जो करें, पावें शांती अपार।
शिवपद के राही बनें, होवें भव से पार।।

।। शान्तेय-शान्तिधारा ।।

दोहा- पुष्पाञ्जलिं करते विशद, लेकर पावन फूल।
कर्म अनादी से लगे, हो जाते निर्मूल।।

।। दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत।।

पञ्चकल्याणक

(मोतियादाम छन्द)

आषाढ़ वदि द्वितीया रही महान, प्रभु जी पाए गर्भ कल्याण।
पूजते आदिनाथ पद आज, बने जो तारण तरण जहाज।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़वदि द्वितीयायां गर्भकल्याण प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्र वदि नौमी को भगवान, प्राप्त शुभ किए जन्मकल्याण।
पूजते आदिनाथ पद आज, बने जो तारण तरण जहाज।।2।।

ॐ ह्रीं चैत्रवदि नवम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्र वदि नौमी को शुभकार, प्रभु ने संयम लीन्हा धार।
पूजते आदिनाथ पद आज, बने जो तारण तरण जहाज।।3।।

ॐ ह्रीं चैत्रवदि नवम्यां तपकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वदी फाल्गुन एकादशी जान, प्रभु जी पाए केवलज्ञान।
पूजते आदिनाथ पद आज, बने जो तारण तरण जहाज।।4।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनवदि एकादश्यां केवलज्ञानकल्याण प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ वदि चौदश हुई महान, कैलाशगिरि से पाए निर्वाण।
पूजते आदिनाथ पद आज, बने जो तारण तरण जहाज।।5।।

ॐ ह्रीं माघवदि चतुर्दश्यां मोक्षकल्याण प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

शीश झुकाते आपके, चरणों बालाबाल।
आदिनाथ भगवान की, गाते हम जयमाल।।

(चौबोला छन्द)

आदिनाथ तीर्थंकर स्वामी, धर्म प्रवर्तन किए महान।
निज स्वभाव में लीन हुए प्रभु, पाए शाश्वत मुक्ती धाम।।
जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में, नगर अयोध्या महति महान।
चयकर के सर्वार्थ सिद्धि से, पाए प्रभू गर्भ कल्याण।।1।।
पाण्डु शिला पे हर्ष भाव से, इन्द्र किए प्रभु का अभिषेक।।
नाम दिया सौधर्म इन्द्र ने, प्रभु के पग में लक्षण देख।।
षट् कर्मों का राज्य अवस्था, में ही दिए आप संदेश।
नृत्य देखकर नीलाञ्जना का, संयम धारे प्रभु विशेष।।2।।
सिद्धारथ वन में जा प्रभु ने, निज आतम का किया मनन।
एक हजार वर्ष तप करके, शुक्ल ध्यान में हुए मगन।।

कर्म घातियाँ नाश प्रभु ने, पाया पावन केवलज्ञान।
इन्द्राज्ञा पा धन कुबेर ने, समवशरण कीन्हा निर्माण॥3॥
गंध कुटी में कमलाशन पर, अधर विराजे जिन तीर्थेश।
ॐकारमय दिव्य देशना, द्वारा दिए भव्य संदेश॥
अष्टापद पर जाके प्रभु जी, किए कर्म का पूर्ण विनाश।
मोक्ष महापद को पाकर के, सिद्धशिला पर कीन्हे वास॥4॥
किए प्रतिष्ठित जिन प्रतिमाएँ, नगर नगर में आभावान।
विशद भाव से जिनके चरणों, करते हैं हम भी गुणगान॥
नाथ आपकी अर्चा करके, मेरे मन जागा आनन्द।
पुण्योदय जागा है मेरा, हुआ पाप आश्रव भी मंद॥5॥

(घत्ता छंद)

हे आदीश्वर! प्रथम जिनेश्वर, भव संताप विनाश करो।
हम तुमको ध्याते पूज रचाते, मेरे उर में वास करो॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- तीन लोक में पूज्य है, आदिनाथ दरबार।
जिनकी अर्चा से मिले, मोक्ष महल का द्वार॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्

प्रथम वलयः

दोहा- पाए क्षायिक लब्धियाँ, आदिनाथ भगवान।
करते जिनकी अर्चना, पाने शिव सोपान॥

प्रथम वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

नौ क्षायिक लब्धियों के अर्घ्य

(शम्भू छंद)

ज्ञानावरणी कर्म विनाशे, केवलज्ञान जगाए हैं।
ऐसे श्री अरहंत प्रभु पद सादर शीश झुकाए हैं॥

करके योग निरोध प्रभू जी, निज आतम को ध्याते हैं।
कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धी पाते हैं॥1॥

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणी कर्मविनाशक क्षायिक ज्ञानलब्धि प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म दर्शनावरणी नाशे, क्षायिक दर्शन पाए हैं।
क्षायिक लब्धी पाने वाले, तीर्थंकर कहलाए हैं॥
करके योग निरोध प्रभू जी, निज आतम को ध्याते हैं।
कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धी पाते हैं॥2॥

ॐ ह्रीं दर्शनावरणी कर्म विनाशक क्षायिक दर्शनलब्धि प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन मोही कर्म विनाशे, सत् सम्यक्त्व जगाए हैं।
कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धी पाए हैं॥
करके योग निरोध प्रभू जी, निज आतम को ध्याते हैं।
कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धी पाते हैं॥3॥

ॐ ह्रीं दर्शन मोहनीय कर्म विनाशक क्षायिक सम्यक्त्व लब्धि प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चारित मोही कर्म विनाशे, क्षायिक चारित पाए हैं।
कर्म घातिया नाश किए प्रभु, तीर्थंकर कहलाए हैं॥
करके योग निरोध प्रभू जी, निज आतम को ध्याते हैं।
कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धी पाते हैं॥4॥

ॐ ह्रीं चारित्र मोहनीय कर्म विनाशक क्षायिक चारित्र लब्धि प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म विनाशी अन्तराय के, पाए हैं जो क्षायिक दान।
क्षायिक लब्धी पाने वाले, तीन लोक में रहे महान्॥
करके योग निरोध प्रभू जी, निज आतम को ध्याते हैं।
कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धी पाते हैं॥5॥

ॐ ह्रीं दान अन्तराय कर्म विनाशक क्षायिक दान लब्धि प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लाभ अन्तराय कर्म विनाशे, पाए क्षायिक लाभ महान्।
पूजनीय हो गये लोक में, करते हैं जग का कल्याण॥
करके योग निरोध प्रभू जी, निज आतम को ध्याते हैं।
कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धी पाते हैं॥6॥

ॐ ह्रीं लाभ अन्तराय कर्म विनाशक क्षायिक लाभ लब्धि प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भोग अन्तराय कर्म विनाशे, पाए हैं जो क्षायिक भोग।
तीनों योगों के धारी के, मिटे जन्म मृत्यू के रोग॥
करके योग निरोध प्रभू जी, निज आतम को ध्याते हैं।
कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धी पाते हैं॥7॥

ॐ ह्रीं भोग अन्तराय कर्म विनाशक क्षायिक भोग लब्धि प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तराय कर्मों के नाशी, पाए हैं क्षायिक उपभोग।
करके योग निरोध जिनेश्वर, पाते मुक्ती का संयोग॥
करके योग निरोध प्रभू जी, निज आतम को ध्याते हैं।
कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धी पाते हैं॥8॥

ॐ ह्रीं उपभोग अन्तराय कर्म विनाशक क्षायिक उपभोग लब्धि प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीर्यान्तराय कर्म के नाशी, पाए क्षायिक वीर्य महान्।
क्षायिक लब्धी पाने वाले, करते हैं जग का कल्याण॥
करके योग निरोध प्रभू जी, निज आतम को ध्याते हैं।
कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धी पाते हैं॥9॥

ॐ ह्रीं वीर्यान्तराय कर्म विनाशक क्षायिक वीर्य लब्धि प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षायिक नौ लब्धी जो पाए, कर्म घातिया किए विनाश।
ज्ञाता दृष्ट हुए लोक में, कीन्हे निज आतम में वास॥
तीन गती के जीव भाव से, भक्ती करने आते हैं।
कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धी पाते हैं॥10॥

ॐ ह्रीं चतु: घातिया कर्म विनाशक क्षायिक नवलब्धि प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलय:

दोहा- **दोष अठारह से रहित, होते हैं भगवान।**
जिनकी अर्चा कर मिले, पावन पद निर्वाण॥

(द्वितीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अठारह दोष से रहित जिन

(चौपाई)

केवलज्ञानी होने वाले, क्षुधा वेदना खोने वाले।
दोष अठारह के हैं नाशी, गाए सिद्ध शिला के वासी॥1॥

ॐ ह्रीं क्षुधादोष रहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तृषा दोष भी न रह पाए, जो भी केवलज्ञान जगाए।
दोष अठारह के हैं नाशी, गाए सिद्ध शिला के वासी॥2॥

ॐ ह्रीं तृषादोष रहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जन्म दोष भी न रह पाए, जो भी केवलज्ञान जगाए।
दोष अठारह के हैं नाशी, गाए सिद्ध शिला के वासी॥3॥

ॐ ह्रीं जन्मदोष रहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जरा दोष की होती हानी, बन जाते जो केवल ज्ञानी।
दोष अठारह के हैं नाशी, गाए सिद्ध शिला के वासी॥4॥

ॐ ह्रीं जरादोष रहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

विस्मय दोष रहे न भाई, केवलज्ञानी के दुखदायी।
दोष अठारह के हैं नाशी, गाए सिद्ध शिला के वासी॥5॥

ॐ ह्रीं विस्मयदोष रहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अरति दोष उनके भी खोवे, केवल ज्ञानी जो भी होवे।
दोष अठारह के हैं नाशी, गाए सिद्ध शिला के वासी॥6॥

ॐ ह्रीं अरतिदोष रहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

खेद दोष के होते त्यागी, केवल ज्ञानी बहु बड़भागी।
दोष अठारह के हैं नाशी, गाए सिद्ध शिला के वासी॥7॥

ॐ ह्रीं खेददोष रहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

रोग देह में कभी न आवे, जो भी केवल ज्ञान जगावे।
दोष अठारह के हैं नाशी, गाए सिद्ध शिला के वासी।।8।।

ॐ ह्रीं रोग रहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन में शोक कभी न लाते, जो नर केवल ज्ञान जगाते।
दोष अठारह के हैं नाशी, गाए सिद्ध शिला के वासी।।9।।

ॐ ह्रीं शोकदोष रहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मद उनके कैसे रह पावे, जो भी केवल ज्ञान जगावे।
दोष अठारह के हैं नाशी, गाए सिद्ध शिला के वासी।।10।

ॐ ह्रीं मददोष रहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

मोह दोष के हैं वे नाशी, जो हैं केवलज्ञान प्रकाशी।
दोष अठारह के हैं नाशी, गाए सिद्ध शिला के वासी।।11।।

ॐ ह्रीं मोहदोष रहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भय का क्षय उनके हो जावे, केवल ज्ञान मुनि प्रगटावे।
दोष अठारह के हैं नाशी, गाए सिद्ध शिला के वासी।।12।।

ॐ ह्रीं भयदोष रहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

निद्रा दोष त्यागते स्वामी, केवलज्ञानी अन्तर्यामी।
दोष अठारह के हैं नाशी, गाए सिद्ध शिला के वासी।।13।।

ॐ ह्रीं निद्रादोष रहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिंता उनके हृदय न आवे, जो तीर्थंकर पदवी पावे।
दोष अठारह के हैं नाशी, गाए सिद्ध शिला के वासी।।14।।

ॐ ह्रीं चिंतादोष रहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

स्वेद रहे न तन में कोई, जिनने भव से मुक्ति पाई।
दोष अठारह के हैं नाशी, गाए सिद्ध शिला के वासी।।15।।

ॐ ह्रीं स्वेददोष रहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

राग-दोष उनका नश जाए, मुनिवर केवलज्ञान जगाए।
दोष अठारह के हैं नाशी, गाए सिद्ध शिला के वासी।।16।।

ॐ ह्रीं रागदोष रहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मन में द्वेष कभी न लावें, विशद ज्ञान जो मुनि प्रगटावें।
दोष अठारह के हैं नाशी, गाए सिद्ध शिला के वासी।।17।।

ॐ ह्रीं द्वेषदोष रहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मरण दोष के होते नाशी, केवल ज्ञानी शिवपुर वासी।
दोष अठारह के हैं नाशी, गाए सिद्ध शिला के वासी।।18।।

ॐ ह्रीं मरण दोष रहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आदिनाथ जिनवर अविकारी, अष्टकर्म के हैं संहारी।
दोष अठारह के हैं नाशी, गाए सिद्ध शिला के वासी।।19।।

ॐ ह्रीं द्वाविंशति परीषहजय एवं अष्टादश दोषरहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलय:

दोहा- छियालिस पाए मूलगुण, आदिनाथ भगवान।
अर्चा करते भाव से, जिनकी महति महान।।

तृतीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

10 जन्म के अतिशय

दश अतिशय पाए प्रभु पावन, निर्मल सुखदाई।
स्वेद रहित जिनवर का तन है, अति पावन भाई।।
प्रभु जी शिवपदवी पाए।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगल गाए।।1।।

ॐ ह्रीं स्वेदरहित सहजातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु तन है मल मूत्र रहित शुभ, अति पावन भाई।
भव्यों को आह्लादित करता, निर्मल सुखदाई।।
प्रभु जी शिवपदवी पाए।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगल गाए।।2।।

ॐ ह्रीं नीहाररहित सहजातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

समचतुस्त्र संस्थान प्रभु का, सुन्दर सुखदाई।
घट बढ़ अंग न होवे कोई, जिन की प्रभुताई।।

प्रभु जी शिवपदवी पाए।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगल गाए।।3।।

ॐ ह्रीं समचतुष्क संस्थान सहजातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

वज्रवृषभ नाराच संहनन, श्री जिनेन्द्र पाए।
परमौदारिक तन का बल प्रभु, अतिशय प्रगटाए।।
प्रभु जी शिवपदवी पाए।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगल गाए।।4।।

ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराच संहनन सहजातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सुरभित परम सुगंधित श्री जिन, मनहर तन पाए।
तीर्थंकर प्रकृति के कारण, अतिशय दिखलाए।।
प्रभु जी शिवपदवी पाए।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगल गाए।।5।।

ॐ ह्रीं सुगंधित तन सहजातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

रूप सुसुंदर महा मनोहर, श्री जिनवर पाए।
अतिशय रूप के धारी जिनके, पावन गुण गाए।।
प्रभु जी शिवपदवी पाए।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगल गाए।।6।।

ॐ ह्रीं अतिशयरूप सहजातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आठ अधिक इक सहस सुलक्षण, तन में कहलाए।
जन्म होत ही श्री जिनवर ने, मंगलमय पाए।।
प्रभु जी शिवपदवी पाए।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगल गाए।।7।।

ॐ ह्रीं सहस्राष्टलक्षण सहजातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु के तन में रक्त मनोहर, श्वेत वर्ण भाई।
यह अतिशय अनुपम कहलाए, प्रभु की प्रभुताई।।
प्रभु जी शिवपदवी पाए।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगल गाए।।8।।

ॐ ह्रीं श्वेतरुधिर सहजातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जन-जन का मन मोहित करती, हित-मित प्रिय वाणी।
अतिशय अनुपम मंगलमय है, जग की कल्याणी।।
प्रभु है पावन वाणी।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, शिव पद वरदानी।।9।।

ॐ ह्रीं प्रियहितवचन सहजातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सर्व जहाँ में अतिशयकारी, बल जिनवर पाए।
भक्ति भाव से सुर नर प्रभु के, चरणों सिर नाए।।
प्रभु जी शिवपदवी पाए।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगल गाए।।10।।

ॐ ह्रीं अतुल्यबल सहजातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

10 केवलज्ञान के अतिशय

(विष्णुपद छन्द)

केवलज्ञान प्रकट होते ही, दश अतिशय पावें।
शत् योजना दुष्काल वहाँ का, शीघ्र विनश जावे।।
श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए।
अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए।।11।।

ॐ ह्रीं गव्यूति शत् चतुष्टय सुभिक्षत्व घातिक्षय जातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होय गमन आकाश प्रभू का, अति विस्मयकारी।
भक्ति भाव से आते मिलकर, वहाँ देव भारी।।
श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए।
अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए।।12।।

ॐ ह्रीं आकाशगमन घातिक्षय जातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तीन लोक के नाथ! जिनेश्वर, भक्ती हितकारी।
मार सके न कोई किसी को, हैं अदया हारी।।
श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए।
अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए।।13।।

ॐ ह्रीं अदयाभाव घातिक्षय जातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

होय नहीं उपसर्ग प्रभु पर, किसी तरह भाई।
विशद ज्ञान की महिमा है यह, प्रभु की प्रभुताई।।
श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए।
अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए।।14।।

ॐ ह्रीं उपसर्गाभाव घातिक्षय जातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

क्षुधा रोग से पीड़ित सारे, जग में जीव कहे।
क्षुधा वेदना को जीते प्रभु, बिन आहार रहे।।
श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए।
अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए।।11।।

ॐ ह्रीं कवलाहार रहित घातिक्षय जातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

समवशरण में अधर विराजे, पूर्व दृष्टि कीजे।
भवि जीवों को चतुर्दिशा में, प्रभु दर्शन दीजे।।
श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए।
अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए।।16।।

ॐ ह्रीं चतुर्मुखदर्श घातिक्षय जातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सब विद्या के ईश्वर प्रभु जी, सकल ज्ञानधारी।
ध्यावें प्रभु को भक्ति भाव से, होवें सुखकारी।।
श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए।
अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए।।17।।

ॐ ह्रीं सर्व विद्येश्वरत्व घातिक्षय जातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पुद्गल के परमाणू मिलकर, बने देह भाई।
छाया नहीं पड़े प्रभु तन की, प्रभु अतिशय पाई।।
श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए।
अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए।।18।।

ॐ ह्रीं छायारहित घातिक्षय जातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

बढ़ें नहीं नख केश जरा भी, विशद ज्ञान जगते।
उपमा नहीं है जग में कोई, अति मनहर लगते।।

श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए।
अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए।।19।।

ॐ ह्रीं समान नखकेशत्व घातिक्षय जातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पलक झपकती नहीं बंद न, खुलती है भाई।
नाशादृष्टी रहे निरन्तर, यह शुभ प्रभुताई।।
श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए।
अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए।।20।।

ॐ ह्रीं अक्षस्पंदरहित घातिक्षय जातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

14 देवकृत अतिशय

चौदह अतिशय कहे देवकृत, श्री जिन के भाई।
अर्धमागधी भाषा प्रभु की, भविजन सुखदाई।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।21।।

ॐ ह्रीं सर्वार्धमागधी भाषा देवोपनीतातिशय धारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मैत्रीभाव सभी जीवों में, स्वयं जगे भाई।
महिमा विस्मयकारी है शुभ, प्रभु की प्रभुताई।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।22।।

ॐ ह्रीं सर्वमैत्रीभाव देवोपनीतातिशय धारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

षट् ऋतु के फल फूल स्वयं ही, खिल जाते भाई।
श्री जिन का हो गमन जहाँ पर, प्रभु की प्रभुताई।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।23।।

ॐ ह्रीं सर्वतुफलादि तरु परिणाम भाषा देवोपनीतातिशय धारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्पण सम भूमी हो जावे, अति मंगलकारी।
जहाँ चरण पड़ते श्री जिनके, हो विस्मयकारी।।

तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।24।।

ॐ ह्रीं आदर्शतल प्रतिमा रत्नमही देवोपनीतातिशय धारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित मंद पवन बहती है, भविजन सुखदाई।
श्रीजिन की महिमा का फल है, प्रभु की प्रभुताई।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।25।।

ॐ ह्रीं सुगंधित विहरण मनुगत वायुत्व देवोपनीतातिशय धारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वानंद होय इस जग में, जिन दर्शन पाके।
सुरपति नरपति धन्य मानते, जिन के गुण गाके।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।26।।

ॐ ह्रीं सर्वानंदकारक देवोपनीतातिशय धारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कंटक रहित भूमि हो जावे, श्री जिन पद पाके।
सुरपति नरपति हर्ष मनावें, श्री जिन गुण गाके।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।27।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारोपशमित धूलि कंटकादि भाषा देवोपनीतातिशय धारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नभ में जय जयकार करें सुर, महिमा दिखलावें।
हो अपार सुखकारी जग में, प्रभु के गुण गावें।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।28।।

ॐ ह्रीं आकाशे जय-जयकार देवोपनीतातिशय धारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

गंधोदक की वृष्टि करें सुर, मन में हर्षावें।
जन-जन को हितकारी पावन, महिमा दिखलावें।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।29।।

ॐ ह्रीं मेघकुमारकृत गंधोदक वृष्टि देवोपनीतातिशय धारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चरण कमल तल कमल रचाते, पावन सुखदाई।
सुर नरेन्द्र की महिमा है यह, प्रभु की प्रभुताई।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।30।।

ॐ ह्रीं चरण कमल तलरचित स्वर्ण कमल देवोपनीतातिशय धारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गगन सुनिर्मल हो जावे अति, श्री जिन के आवें।
नर सुरेन्द्र अति नाचे गावें, मन में हर्षावें।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।31।।

ॐ ह्रीं शरदकाल वन्निर्मल गगन गमनत्व देवोपनीतातिशय धारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व दिशाएँ धूम रहित हों, मनहर सुखदाई।
नाचें गावें हर्ष मनावें, सुर नर गुण गाई।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।32।।

ॐ ह्रीं सर्वानंदकारक देवोपनीतातिशय धारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

धर्मचक्र चलता है आगे, शुभ महिमाधारी।
भवि जीवों के मन को मोहे, अति मंगलकारी।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।33।।

ॐ ह्रीं धर्मचक्रचतुष्टय भाषा देवोपनीतातिशय धारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मंगल द्रव्य अष्ट शुभ लावें, भक्ति सहित भाई।
देव समर्पित रहें भाव से, जिन महिमा गाई॥
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी॥34॥

ॐ ह्रीं अष्ट मंगल द्रव्य देवोपनीतातिशय धारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आठ प्रातिहार्य के अर्घ्य

(हरिगीतिका छंद)

तरु अशोक सुंदर सुखदाई, दीखे मनहर भाई।
सब जीवों के शोक हरे जो, यह प्रभु की प्रभुताई॥
श्री अरहंत सकल परमातम, प्रातिहार्य वसुधारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी॥35॥

ॐ ह्रीं अशोकतरु सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पुष्प सुवृष्टी करते सुरगण, मन में अति हर्षावें।
पूजा अर्चा करें वंदना शुभ, अतिशय गुण गावें॥
श्री अरहंत सकल परमातम, प्रातिहार्य वसुधारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी॥36॥

ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दिव्य ध्वनि खिरती जिनवर की, ओम्कार मय प्यारी।
पाप विनाशी धर्म प्रकाशी, हैं जग में मंगलकारी॥
श्री अरहंत सकल परमातम, प्रातिहार्य वसुधारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी॥37॥

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनि सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चौंसठ चँवर ढुरें प्रभु आगे, सुंदर शुभ सुखकारी।
महिमा दिखलाते श्री जिन की, होते है विस्मयकारी॥
श्री अरहंत सकल परमातम, प्रातिहार्य वसुधारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी॥38॥

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठिचामर सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

रत्न जड़ित सुंदर सिंहासन, जिनवर का सोहे।
अधर विराजे उस पर श्री जिन, जो सब जग को मोहे॥
श्री अरहंत सकल परमातम, प्रातिहार्य वसुधारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी॥39॥

ॐ ह्रीं सिंहासन सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भामण्डल के आगे लज्जित, कोटि भी सूर्य होवें।
सप्त भवों को जाने भविजन, मन की जड़ता खोवें॥
श्री अरहंत सकल परमातम, प्रातिहार्य वसुधारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी॥40॥

ॐ ह्रीं भामण्डल सत्प्रातिहार्यसहिताय धारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

देव दुंदुभि बाजे बजते, सब आकाश गुँजावें।
देव करें गुणगान भक्ति से, मन में अति हर्षावें॥
श्री अरहंत सकल परमातम, प्रातिहार्य वसुधारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी॥41॥

ॐ ह्रीं देवदुंदुभि सत्प्रातिहार्यसहिताय धारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तीन छत्र शुभ रत्न जड़ित हैं, चन्द्र कांति छवि धारी।
तीन लोक की महिमा गावें, शुभ अतिशय सुखकारी॥
श्री अरहंत सकल परमातम, प्रातिहार्य वसुधारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी॥42॥

ॐ ह्रीं छत्रत्रय सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चार अनंत चतुष्टय

दर्श अनंत पाए जिनवर जी, सर्व लोक दर्शाये।
कर्म दर्शनावरणी नाशे, तिन पद शीश झुकाये॥
श्री अरहंत सकल परमातम, अनंत चतुष्टय धारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी॥43॥

ॐ ह्रीं अनंतदर्शन गुणप्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानावरणी कर्म नाशकर, केवलज्ञान प्रकाशे।
सर्व लोक के ज्ञाता श्रीजिन, सर्व चराचर भासे॥

श्री अरहंत सकल परमातम, अनंत चतुष्टय धारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी।।44।।

ॐ ह्रीं अनंतज्ञान गुणप्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहनीय को मोहित करके, ऐसा सबक सिखाया।
हार मान झुक गया चरण में, पास नहीं फिर आया।।
श्री अरहंत सकल परमातम, अनंत चतुष्टय धारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी।।45।।

ॐ ह्रीं अनंतसुख गुणप्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तराय कर्मों के नाशी, जिन अर्हत् कहलाए।
निज आतम का ध्यान लगाकर, वीर्यानन्त जगाए।।
श्री अरहंत सकल परमातम, अनंत चतुष्टय धारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी।।46।।

ॐ ह्रीं अनंतवीर्य गुणप्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **छियालिस पाए मूलगुण, आदिनाथ भगवान।**
विशद गुणों के हेतु हम, करते हैं गुणगान।।47।।

ॐ ह्रीं षट् चत्त्वारिंशद्गुणप्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

समुच्चय जयमाला

दोहा- गुण गाते हैं भाव से, जिनके बालाबाल।
ऋषभदेव भगवान की, गाते हैं जयमाल।।

(ज्ञानोदय छन्द)

जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में, रही अयोध्या पुरी विशाल।
नाभिराय चौदहवें कुलकर, के सुत मरुदेवी के लाल।।
सोलह स्वप्न देखती माता, रत्न वृष्टि हो पन्द्रह मास।
चये आप सर्वार्थ सिद्धि से, पाया प्रभु ने गर्भावास।।1।।
मति श्रुत अवधि ज्ञान के धारी, होके पाएँ जन्मकल्याण।
हर्षित शत इन्द्रों ने पाण्डु, शिला पे किया अभिषेक महान।।

असि मसि कृषि वाणिज्य कला अरु, शिल्प का दिए आप उपदेश।
राज्य अवस्था को पाके प्रभु, जग के कष्ट मिटाए विशेष।।2।।
नीलाञ्जना की मृत्यु देख के, मन में धारे प्रभू विराग।
द्वादश अनुप्रेक्षा का चिन्तन, करके किए भोग का त्याग।।
वन सिद्धार्थ वृक्ष वट नीचे, नमः सिद्धेभ्यः बोल विशेष।
स्वयं बुद्ध हो दीक्षा धारे, धारे आप दिगम्बर भेष।।3।।
एक वर्ष पश्चात इच्छुरस, नगर हस्तिनापुर आहार।
राजा सोम श्रेयांस के गृह में, दान तीर्थ का किए प्रचार।।
एक हजार वर्ष तप करके, कर्म घातियाँ किए विनाश।
अनन्त चतुष्टय पाए प्रभु ने, कीन्हा केवल ज्ञान प्रकाश।।4।।
वृषभ सेनादि गणी चुरासी, आर्यिका ब्राह्मी रही प्रधान।
गिरि कैलाश कहा अष्टापद, पाए प्रभु जी पद निर्वाण।।
जिसकी प्रतिकृति में जिन प्रतिमा, आदिनाथ की महति महान।
जिनके चरणों विशद भाव से, करते हैं हम भी गुणगान।।5।।

दोहा- धनुष पाँच सौ उच्च प्रभु, तन स्वर्णाभावान।
वृषभ चिन्ह से शोभते, पूज्य हुए भगवान।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- धर्म प्रवर्तन कर प्रभू, खोले मुक्ती द्वार।
ऐसे आदि जिनेश पद, वन्दन बारम्बार।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

मुबारक ये जन्म दिन हो विशद खुशियों से भर जाए।
कभी जीवन में अब तुमको कोई भी गम नहीं आए।।
खुशी जीवन में हो अनुपम विशद हम भावना भाते।
ये जीवन आपका बन्धु श्रेष्ठ फूलों सा महकाए।।

श्री आदिनाथ चालीसा

दोहा- परमेष्ठी जिन पाँच हैं, मंगल उत्तम चार।
शरण चार की प्राप्ति कर, भवदधि पाऊँ पार॥
वंदन करके भाव से, करते हम गुणगान।
चालीसा जिन आदि का, गाते विशद महान॥

चौपाई

लोकालोक अनन्त बताया, जिसका अन्त कहीं न पाया॥1॥
लोक रहा है विस्मयकारी, चौदह राजू है मनहारी॥2॥
ऊर्ध्व लोक ऊर्ध्व में गाया, अधोलोक नीचे बतलाया॥3॥
मध्य लोक है मध्य में भाई, सागर दीप युक्त सुखदायी॥4॥
नगर अयोध्या जन्म लिया है, नाभिराय को धन्य किया है॥5॥
सर्वार्थ-सिद्धि से चय कर आये, मरुदेवी के लाल कहाए॥6॥
चिन्ह बैल का पद में पाया, लोगों ने जयकार लगाया॥7॥
आदिनाथ प्रभु जी कहलाए, प्राणी सादर शीश झुकाए॥8॥
जीवों को षट् कर्म सिखाए, सारे जग के कष्ट मिटाए॥9॥
पद युवराज का पाये भाई, विधि स्वयंवर की बतलाई॥10॥
सुत ने चक्रवर्ति पद पाया, कामदेव सा पुत्र कहाया॥11॥
हुई पुत्रियाँ उनके भाई, कालदोष की यह प्रभुताई॥12॥
ब्राह्मी को श्रुत लिपि सिखाई, ब्राह्मी लिपि अतः कहलाई॥13॥
लघु सुता सुन्दरी कहलाई, अंक ज्ञान की कला सिखाई॥14॥
लाख तिरासी पूरब जानो, काल भोग में बीता मानो॥15॥
इन्द्र के मन में चिंता जागी, प्रभु बने बैठे हैं रागी॥16॥
उसने युक्ति एक लगाई, देवी नृत्य हेतु बुलवाई॥17॥
उससे अतिशय नृत्य कराया, तभी मरण देवी ने पाया॥18॥
दृश्य प्रभु के मन में आया, प्रभु को तब वैराग्य समाया॥19॥
केश लुंच कर दीक्षा धारी, संयम धार हुए अविकारी॥20॥
छह महीने का ध्यान लगाया, चित् का चिंतन प्रभु ने पाया॥21॥
चर्या को प्रभु निकले भाई, विधि किसी ने जान न पाई॥22॥

छह महीने तक प्रभु भटकाए, निराहार प्रभु काल बिताए॥23॥
नृप श्रेयांश को सपना आया, आहार विधि का ज्ञान जगाया॥24॥
अक्षय तृतीया के दिन भाई, चर्या की विधि प्रभु ने पाई॥25॥
भूप ने यह सौभाग्य जगाया, इक्षु रस आहार कराया॥26॥
पञ्चाश्चर्य हुए तब भाई, ये है प्रभुवर की प्रभुताई॥27॥
प्रभुजी केवलज्ञान जगाए, समवशरण तब देव बनाए॥28॥
प्रातिहार्य अतिशय प्रगटाए, दिव्य ध्वनि तब प्रभु सुनाए॥29॥
बारह योजन का शुभ गाए, गणधर चौरासी प्रभु पाए॥30॥
माघ वदी चौदश कहलाए, अष्टापद से मोक्ष सिधाए॥31॥
मोक्ष मार्ग प्रभु ने दर्शाया, जैनधर्म का ज्ञान कराया॥32॥
योग निरोध प्रभुजी कीन्हें, कर्म नाश सारे कर दीन्हें॥33॥
शिव पदवी को प्रभु ने पाया, सिद्ध शिला स्थान बनाया॥34॥
बने पूर्णतः प्रभु अविकारी, सुख अनन्त पाये त्रिपुरारी॥35॥
हम भी यही भावना भाते, पद में सादर शीश झुकाते॥36॥
जगह-जगह प्रतिमाएँ सोहें, भवि जीवों के मन को मोहें॥37॥
क्षेत्र बने कई अतिशयकारी, सारे जग में मंगलकारी॥38॥
जिस पदवी को तुमने पाया, वह पाने का भाव बनाया॥39॥
तव पूजा का फल हम पाएँ, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ॥40॥

दोहा- चालीसा चालीस दिन, दिन में चालीस बार।
'विशद' भाव से जो पढ़ें, पावे भव से पार॥
रोग शोक पीड़ा मिटे, होवे बहु गुणवान्।
कर्म नाश कर अन्त में, होवे सिद्ध महान्॥

मिला जो जन्म है हमको, पूर्व के पुण्य का फल है।
करे जो कर्म यह मानव, विशद फल आज का कल है॥
मनाओ जन्म दिन ऐसा, जन्म न फिर कभी पाए।
जो पाया जन्म ये जग, यहाँ से तो चला चल है॥

श्री आदिनाथ की आरती

(तर्ज - आज करे हम.....)

आज करें हम विशद भाव से, आरती मंगलकारी।
मणिमय दीपक लेकर आये, आदिनाथ दरबार।।
हो जिनवर-हम सब उतारे मंगल आरती।।टेक।।
जन्म प्राप्त कर नगर अयोध्या, को प्रभु धन्य बनाया।
नाभिराय राजा मरुदेवी, ने सौभाग्य जगाया।।
हो जिनवर-हम सब उतारे मंगल आरती।।1।।
षट् कर्मों की शिक्षा देकर, सबके भाग्य जगाए।
नर-नारी सब नाचे गाये, जय जयकार लगाए।।
हो जिनवर-हम सब उतारे मंगल आरती।।2।।
रत्नत्रय पाकर हे स्वामी, मोक्ष मार्ग अपनाया।
आतम ध्यान लगाकर तुमने, केवलज्ञान जगाया।।
हो जिनवर-हम सब उतारे मंगल आरती।।3।।
यही भावना भाते हैं हम, तव पदवी को पावें।
मोक्ष प्राप्त न होवें जब तक, शरण आपकी आवें।।
हो जिनवर-हम सब उतारे मंगल आरती।।4।।
अष्टापद में भक्त आपके, दर्श आपका पाते।
'विशद' आरती करने वाले, बिगड़े भाग्य बनाते।।
हो जिनवर-हम सब उतारे मंगल आरती।।5।।

नहीं अपने पराए का जिसे कुछ ज्ञान होता है।
नहीं गरिमा का भी अपने, जिसे कुछ ध्यान होता है।।
विशद जो लोग हैं ऐसे, नहीं विश्वास के काबिल।
जमाने में विशद सच्चा, नहीं वो इन्सान होता है।।

श्री पार्श्वनाथ की आरती

तर्ज-हम सब उतारे तेरी आरती.....

आज करें हम विशद भाव से, आरति मंगलकारी-2।
पार्श्वनाथ भगवान कहाते-2, जग जन के दुखहारी।।
हो जिनवर ।।टेक।।
अच्युत स्वर्ग से चयकर स्वामी, माँ के गर्भ में आए-2।
अश्वसेन वामा देवी माँ-2, को प्रभु धान्य बनाए।।
हो जिनवर.....।।1।।
गर्भोत्सव पर काशी नगरी, आके देव सजाए-2।
छह नौ माह रत्न वृष्टी कर-2, नाचे हर्ष मनाए।।
हो जिनवर.....।।2।।
जन्मोत्सव पर मेरु गिरि पर, आके न्हवन कराए-2।
सब इन्द्रों ने मिलकर भाई-2, जय जयकार लगाए।।
हो जिनवर.....।।3।।
यह संसार असार जानकर, उत्तम संयम पाए-2।
ज्ञानोत्सव पर समवशरण शुभ-2, आके धनद बनाए।।
हो जिनवर.....।।4।।
शाश्वत तीर्थ की स्वर्ण-भद्र शुभ, कूट से मुक्ती पाए-2।
'विशद' आपकी आरती करने-2, भक्त शरण में आए।।
हो जिनवर.....।।5।।

श्री अरिहंत प्रभु की आरती

तर्ज-कंचन की थाली लाए.....

कंचन की थाली लाए, रत्नों के दीप जलाएँ।
गोघृत से करते थारी आरती॥
हो देवा, हम सब उतारें थारी आरती॥टेक॥
चयकर के प्रभु स्वर्ग से आए, गर्भ कल्याणक पाएँ।
छह नौ माह देव भक्ती से, रत्न वृष्टि करवाएँ॥
हम सब जिन महिमा गाए, भक्ती से शीश झुकाएँ।
करते हैं भविजन थारी आरती, हो देवा.....॥1॥
जन्म कल्याणक के अवशर पर, ऐरावत सुर लाए।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराके, जय-जयकार लगाए॥
सचियाँ श्रृंगार कराए, भक्ती से नाचे गाए।
सब मिल उतारे थारी आरती, हो देवा....॥2॥
तप कल्याणक के अवसर पर, देव पालकी लाएँ।
बैठाकर के प्रभु को उसमें, दीक्षावन ले जाएँ॥
वस्त्र जो स्वयं उतारें, केश भी आप उखाड़े।
नचि-नचि के करते हैं थारी आरती, हो देवा.....॥3॥
शुद्धोपयोग लगाकर प्रभु जी, घाती कर्म नशावें।
अनन्त चतुष्टय पाने वाले, केवल ज्ञान जगावें॥
दिव्य ध्वनि आप सुनाए, तत्वों का सार बताएँ।
कहलाए जो जिन भारती, हो देवा.....॥4॥
योग निरोध करें जिन स्वामी, आठों कर्म नशाएँ।
अष्ट गुणों को पाने वाले, मोक्ष महापद पाएँ॥
नख केश देव जलाएँ, भस्म को माथ लगाए।
सुस्वर से गाए पावन आरती, हो देवा.....॥5॥
तीन लोक में पूज्य हुए हैं, तीर्थंकर पद धारी।
महावीर की महिमा गाते, इस जग के नर नारी॥
समकित का दीपक लाए, ज्ञान की ज्योति जलाए।
चारित की गाए विशद आरती, हो देवा.....॥6॥

त्रिकाल चौबीसी की आरती

तर्ज- ॐ जय.....

ॐ जय जिनवर देवा, स्वामी जय जिनवर देवा।
त्रैकालिक जिनवर की करते, भाव सहित सेवा॥
ॐ जय जिनवर देवा॥टेक॥
निर्वाणादिक भूतकाल के, चौबीस जिन गाए।
स्वामी चौबीस जिन गाए।
घृत के दीप जलाकर के हम-2, आरति को लाए।
ॐ जय जिनवर देवा॥1॥
वर्तमान के तीर्थंकर हैं, वृषभादिक भाई।
स्वामी वृषभादिक भाई॥
भरत क्षेत्र में फैल रही है-2, जिन की प्रभुताई।
ॐ जय जिनवर देवा॥2॥
महापद्म आदिक भविष्य के, जिनवर अविकारी।
स्वामी जिनवर अविकारी॥
तीर्थंकर चौबीस कहलाए-2, जिन मंगलकारी।
ॐ जय जिनवर देवा॥3॥
विद्यमान जिन हैं विदेह के, जिनको हम ध्यातें।
स्वामी जिनको हम ध्याते॥
तीन योग से जिनके चरणों-2, हम भी शिर नातें।
ॐ जय जिनवर देवा॥4॥
तीन काल के तीर्थंकर की, पावन प्रतिमाएँ।
स्वामी पावन प्रतिमाएँ॥
विद्यमान तीर्थेश 'विशद' हैं-2, महिमा हम गाएँ।
ॐ जय जिनवर देवा॥5॥

सहस्त्रकूट की आरती

तर्ज- इह विधि मंगल.....

सहस्त्र कूट की आरति कीजे, अपना जन्म सफल कर लीजे।।टेक।।
जिसमें सहस आठ प्रतिमाएँ, वीतरागता जो दर्शाएँ। सहस्त्र....।।1।।
सहस आठ लक्षण के धारी, जिनवर होते है अविकारी। सहस्त्र..।।2।।
साधू करें साधना भारी, तप होता है कर्म निवारी। सहस्त्र...।।3।।
तप कर पावन पुण्य कमाएँ, कर्म निर्जरा भी जो पाएँ। सहस्त्र...।।4।।
प्रभु अर्हत् पदवी को पाएँ, कर्म नाश कर शिव पद पाएँ। सहस्त्र.।।5।।
स्थापित जिन बिम्ब कराएँ, जिनकी अर्चा कर हर्षाएँ। सहस्त्र..।।6।।
हम भी अतिशय पुण्य कमाएँ, 'विशद' मोक्ष पदवी को पाएँ। सहस्त्र..।।7।।
कर्म नाशकर शिवपुर जाएँ, मानव जीवन सफल बनाएँ। सहस्त्र...।।8।।

मानस्तम्भ की आरती...

(तर्ज-इह विधि मंगल आरति...)

मानस्तंभ की आरति कीजे, अपना जन्म सफल कर लीजे।।टेक।।
जिनवर चारों दिश में सोहें, भवि जीवों के मन को मोहे-मानस्तम्भ...
पूर्व दिशा में जिनवर गाए, वीतरागता जो दर्शाए-मानस्तम्भ...
दक्षिण दिश की प्रतिमा प्यारी, देखत लागे अतिमनहारी-मानस्तम्भ...
पश्चिम दिश के श्री जिन स्वामी, गाए पावन अन्तर्यामी-मानस्तम्भ...
उत्तर के जिन बिम्ब निराले, भव्यों का मन हरने वाले-मानस्तम्भ...
मानस्तंभ का दर्शन पाए, क्षण में मान गलित हो जाए-मानस्तम्भ...
'विशद' भावना हम ये भाएँ, बार-बार जिन दर्शन पाएँ-मानस्तम्भ...
दीप जलाकर के यह लाए, आरति के सौभाग्य जगाए-मानस्तम्भ...

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्जः माई री माई मुंडरे पर तेरे बोल रहा कागा...)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारें, आरति मंगल गावें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....
ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की...2, महिमा कही न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....
सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के....
जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ती करने वाला...2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....
धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के...जय...जय।।

रचयिता : **श्रीमती इन्दुमती गुप्ता**, श्योपुर

आचार्य श्री विशदसागर जी द्वारा रचित 182 विधानों की विशाल श्रृंखला पर्वों के दिनों में करने योग्य विधान

1. श्री आदिनाथ मण्डल विधान
2. श्री आदिनाथ मण्डल विधान
3. श्री सम्भवनाथ मण्डल विधान
4. श्री अभिनन्दननाथ मण्डल विधान
5. श्री सुमतिनाथ मण्डल विधान
6. श्री पद्मप्रभु मण्डल विधान
7. श्री सुपार्श्वनाथ विधान
8. श्री चन्द्रप्रभु विधान
9. श्री पुष्पदन्त विधान
10. श्री शीतलनाथ विधान
11. श्री श्रेयांसनाथ विधान
12. श्री वासुपूज्य विधान
13. श्री विमलनाथ विधान
14. श्री अनन्तनाथ विधान
15. श्री धर्मनाथ विधान
16. श्री शांतिनाथ विधान
17. श्री कुंथुनाथ विधान
18. श्री अरहनाथ विधान
19. श्री मल्लिनाथ विधान
20. श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान
21. श्री नमिनाथ विधान
22. श्री नेमिनाथ विधान
23. श्री पार्श्वनाथ विधान
24. श्री महावीर विधान
25. पंच परमेष्ठी विधान
26. णमोकार मण्डल विधान
27. भक्तामर मण्डल विधान
28. सम्मेद शिखर विधान
29. श्रुत स्कंध विधान
30. याग मण्डल विधान
31. पंचकल्याणक विधान
32. त्रिकाल चौबीसी विधान
33. कल्याण मंदिर विधान
34. लघु समवशरण विधान
35. सर्वदोष प्रायश्चित विधान
36. पंचमेरु विधान
37. लघु नन्दीश्वर विधान
38. श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान
39. जिनगुण सम्पत्ति विधान
40. एकीभाव स्तोत्र विधान
41. ऋषिमण्डल विधान
42. विषापहार स्त्रोत विधान
43. वृहदभक्तामर स्तोत्र विधान
44. वास्तु मण्डल विधान
45. लघु नवग्रह शांतिमण्डल विधान
46. सूर्य अरिष्ट निवारक श्री पदमप्रभु विधान
47. चौंसठ ऋद्धि विधान
48. कर्मदहन मण्डल विधान
49. लघु नवदेवतर विधान
50. सहस्त्रनाम विधान
51. चारित्र लब्धी विधान
52. अनन्त व्रतमण्डल विधान
53. कालसर्प योग निवारक विधान
54. शनि अरष्टि निवारक विधान
55. आचार्य परमेष्ठी विधान
56. सम्मेद शिखरकूट पूजन विधान
57. सरस्वती विधान
58. विशद महाअर्चना विधान
59. कल्याण मंदिर विधान (बड़ागांव)
60. अहिच्छत्र पार्श्वनाथ विधान
61. अर्हतनाम विधान
62. सम्यक् आराधना विधान
63. मृत्युंजय विधान
64. शांति प्रदायक शांति विधान
65. लघु मृत्युंजय विधान
66. जम्बूद्वीप विधान
67. चारित्र शुद्धीव्रत विधान
68. क्षायिक नव लब्धी विधान
69. लघु स्वयंभू स्तोत्र विधान
70. गोम्मटेश बाहुबली विधान
71. निर्वाण क्षेत्र विधान
72. तत्वार्थ सूत्र विधान (लघु)
73. त्रैलोक्य मण्डल विधान
74. पुण्यास्त्रव विधान
75. सप्तऋषि विधान
76. श्री शांति कुंथु अरहनाथ विधान
77. श्रावक व्रत दोष
78. तीर्थंकर पंचकल्याणक तीर्थ विधान
79. सम्यक् दर्शन विधान
80. श्रुत ज्ञान व्रत विधान
81. चारित्र शुद्धिव्रत विधान (जाप्य)
82. मनोकामना पूर्णशांति विधान
83. कलिकुण्ड पार्श्वनाथ विधान
84. तीर्थंकर पंचकल्याणक तिथि विधान
85. विजयश्री विधान
86. श्री आदिनाथ विधान (रानीला)
87. श्री शांतिनाथ विधान (सामोद)
88. श्री आदिनाथ पंचकल्याणक विधान
89. षट् खण्डागम विधान
90. दिव्य देशना विधान
91. श्री आदिनाथ विधान (रेवाड़ी)
92. नवग्रह शांति विधान
93. रक्षाबन्धन विधान
94. तीर्थंकर विधान
95. गणधरवलय विधान (लघु)
96. गिरनार गिरि विधान
97. श्री चन्द्रप्रभु विधान (तिजारा)
98. ऋषिमण्डल विधान (द्वितीय)
99. कालसर्प दोष निवारक कल्याण मंदिर
100. वास्तु विधान (द्वितीय)
101. भक्तामर विधान (चोपाई)
102. पद्मावती विधान
103. 96 क्षेत्रफल विधान
104. बड़े बाबा विधान
105. कल्पद्रुम विधान (लघु)
106. केवल्यलक्ष्मी प्राप्ति विधान
107. महावीर समवशरण विधान
108. चान्दनपुर महावीर विधान
109. श्री शांति विधान (शांतिनाथ खोह)
110. श्री पार्श्वनाथ विधान (खण्डेला)
111. सुगन्ध दशमी विधान
112. कर्म निर्झरव्रत विधान
113. निर्दुख सप्तमी व्रत विधान
114. रविव्रत पूजा विधान
115. सौभाग्यदशमी व्रत विधान
116. पुरन्दर विधान
117. रोहिणी व्रत विधान
118. अनन्त वीर्य केवली विधान
119. मौन एकादशी व्रत विधान
120. सुख सम्पति व्रत विधान
121. चन्दन षष्ठीव्रत विधान
122. श्री पार्श्वनाथ विधान (निमोला)
123. श्री पार्श्वनाथ विधान (गंभीरा)
124. यागमण्डल विधान (लघु)
125. चारित्र शुद्धि विधान (वृहद)
126. अष्टान्हिका विधान (वृहद)
127. चौबीस तीर्थंकर विधान (वृहद)
128. नवदेवता विधान (वृहद)
129. ऋषि मण्डल विधान (वृहद)
130. नवगृहशांति विधान (वृहद)
131. पंच बालयति विधान (वृहद)
132. तत्वार्थ सूत्र विधान (वृहद)
133. सहस्त्र नाम विधान (वृहद)
134. नन्दीश्वर विधान (वृहद)
135. महामृत्युंजय विधान (वृहद)
136. दशलक्षण विधान (वृहद)
137. रत्नत्रय विधान (वृहद)
138. सिद्धचक्र विधान (वृहद)
139. अभिनवकल्पतरू विधान (वृहद)
140. समवशरण विधान (वृहद)
141. इन्द्रध्वज महामण्डल विधान
142. धर्मचक्र विधान (वृहद)
143. अर्हत् महिमा विधान (वृहद)
144. विदेह क्षेत्र विद्यमान बीस तीर्थंकर विधान (वृहद)
145. एक सौ सत्तर तीर्थंकर विधान (वृहद)
146. तीन लोक विधान (वृहद)
147. सोलहकारण भावना विधान (वृहद)
148. गणधर वलय विधान (वृहद)
149. चौबीस तीर्थंकर निर्वाण भक्ति विधान (वृहद)
150. चौबीस तीर्थंकर विधान (द्वितीय) (वृहद)
151. कल्पद्रुम विधान
152. चौसठ ऋद्धि विधान (लघु)
153. (कांजीबारस) श्रावण द्वादशी विधान
154. चूलगिरि विधान
155. पंचपरमेष्ठी विधान
156. तीस चौबीस विधान
157. आकाश पंचमी विधान
158. पुष्पांजलि विधान
159. नवनिधि विधान
160. साप्ताहिक सप्त विधान
161. पल्य विधान
162. शांतिभक्ति विधान
163. आ. श्रीविराग सागर विधान
164. चैत्य भक्ति विधान
165. श्री ऋषभदेव विधान
166. रत्नत्रय विधान
167. रक्षाबन्धन विधान
168. ऋद्धि सिद्धि विधान
169. भरत केवली विधान
170. सर्वतोभद्र विधान
171. शांतिविधान (सर्वोदयतीर्थ)
172. आदिनाथ विधान (अष्टापद)
173. ऋषभदेव विधान (नजफगढ़)
174. सैंतालिश भक्ति विधान
175. शांति विधान (तिजारा)
176. पंचकल्याणक विधान (लघु)
177. महावीर पंचकल्याणक विधान
178. श्री योगसार विधान
179. गणधर वलय विधान (लघु)
180. देहरा तिजारा चन्द्रप्रभु विधान (लघु)
181. जम्बू स्वामी विधान
182. जैनत्व संस्कार विधान

संकलन प्रयास : मुनि श्री विशालसागर जी महाराज

D:\meenakshi\vishad sagar\new\final 09-05-2018\ashtapad teerth # final print